- 19th Year
- Issue: 280
- 19.02.2026 (THURSDAY)
- ROURKELA
- R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
- (Pages-6)
- Price:2.00

दैनिक

कलिंग समाचार

The kalingasamachar

e-paper-www.thekalingasamachar.com

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिले गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई, एआई समिट पर हुई बड़ी चर्चा

नयी दिल्ली १८/०२ (संवाददाता): गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई बुधवार को दिल्ली पहुंचे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिले, ज़्योंकि इंडिया एआई इज़्पैज़्ट समिट 2026 शुरू हो गया है। वे इस बड़े इवेंट में शामिल होने के लिए यहां आए हैं, और रिपोर्ट के मुताबिक, वे 20 फरवरी को एक कीनोट स्पीच देंगे। देश में आने के कुछ ही समय बाद, पिचाई ने एज़्स (पहले ट्विटर के नाम से जाना जाता था) पर पोस्ट किया कि वे वापस आकर खुश हैं और उन्होंने सभी को गर्मजोशी से स्वागत के लिए धन्यवाद दिया। इंडिया एआई इज़्पैज़्ट समिट 2026, 16 फरवरी से 20 फरवरी तक नई दिल्ली के भारत मंडपम में हो रहा है। यह ग्लोबल साउथ में इतने बड़े लेवल पर होने वाला पहला ग्लोबल एआई समिट है। दुनिया भर से कई पॉलिसीमेकर, ग्लोबल टेज़्नोलॉजी लीडर, स्टार्टअप, एआई रिसर्चर, एकेडेमिशियन, इनोवेटर, हेल्थकेयर लीडर और सिविल सोसाइटी के प्रतिनिधि अपने इनोवेशन शेयर करने के लिए आए हैं। इसमें 110 से ज़्यादा देश और लगभग 30 इंटरनेशनल ऑर्गनाइज़ेशन हिस्सा ले रहे हैं, जिनमें कई हेड ऑफ़ स्टेट और मिनिस्टर शामिल हैं। एआई समिट का मकसद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर ग्लोबल सहयोग को मजबूत करना है, और न सिर्फ भारत में बल्कि दुनिया भर में गवर्नेंस, सेज़्टी और बड़े सामाजिक असर पर फोकस करना है।

यह समिट तीन चीज़ों के बारे में है- लोग, प्लैनेट और प्रोग्रेस। इसका मतलब है कि एआई बनाते समय इंसानों को पहले रखना, यह पक्का करना कि हमारी टेक पर्यावरण की मदद करे, और ऐसी ग्रोथ को बढ़ावा देना जिसमें सभी शामिल हों। यह भारत की अपनी सोच- सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय से मेल खाता है, जो सभी की भलाई और खुशी के बारे में है। इसका मकसद एआई का इस्तेमाल करके इंसानियत की मदद करना और इसके फ़ायदे दुनिया भर में शेयर करना है।

पीएम मोदी का कल एएनआई ने इंटरव्यू लिया, जिसमें उन्होंने एआई और युवाओं के लिए इसके फ़ायदों के बारे में खुलकर बात की, खासकर जब ड्रुज्ञ सेज़्टर की बात हो। उन्होंने कहा कि उन्हें एआई में मौके और चुनौतियों के लिए बहुत पोटेंशियल दिखता है। उनके हिसाब से, स्मार्ट आउटसोर्सिंग और ऑटोमेशन एआई से पावर्ड हैं जो भारत की ड्रुज्ञ इंडस्ट्री को 2030 तक स्ष्ठ 400 बिलियन तक पहुंचाने में मदद कर सकते हैं। उन्हें लगता है कि एआई सब कुछ बदल देगा और कंपनियों को सिर्फ़ आम सर्विसेज़ से आगे बढ़कर कटिंग-एज, एआई-ड्रिवन सॉल्यूशन बनाने के लिए मोटिवेट करेगा। यह समिट निश्चित रूप से भारतीय एआई डेवलपमेंट में एक माइलस्टोन जैसा लगता है। यह आगे बढ़ रहा है और दुनिया को दिखा रहा है कि हमारा देश ज़िम्मेदार, इनज़्लूसिव एआई और आगे के डेवलपमेंट में लीड करने के लिए तैयार है।

भारत-फ्रांस की रणनीतिक साझेदारी हुई और मजबूत, हैमर मिसाइल समझौते से दुश्मनों की बढ़ेगी टेंशन

नयी दिल्ली १८/०२ (संवाददाता): भारत और फ्रांस ने अपने रणनीतिक संबंधों को एक नई ऊंचाई देते हुए मंगलवार को 10 वर्षीय रक्षा सहयोग समझौते का नवीनीकरण किया। यह महत्वपूर्ण कदम छठे भारत-फ्रांस वार्षिक रक्षा संवाद के दौरान उठाया गया, जिसकी सह-अध्यक्षता भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और उनकी फ्रांसीसी समकक्ष कैथरीन वॉट्रिन ने की। इस बैठक ने न केवल पुराने वादों को दोहराया, बल्कि भविष्य की रक्षा जरूरतों के लिए ठोस जमीन भी तैयार की एक आधिकारिक बयान में कहा गया, ''10 वर्षीय रक्षा सहयोग समझौते के नवीनीकरण पर भारतीय पक्ष की ओर से रक्षा सचिव और फ्रांसीसी पक्ष की ओर से अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं रणनीति के उप महानिदेशक ने हस्ताक्षर किए।''

बयान में आगे कहा गया कि भारत में हैमर मिसाइलों के निर्माण के लिए संयुक्त उद्यम संबंधी एक समझौते ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किया गया। यह समझौता ज्ञापन भारत इलेज़्ट्रॉनिज़्स लिमिटेड (बीईएल) के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) और सैफ्रान इलेज़्ट्रॉनिज़्स एंड डिफेंस के कार्यकारी उपाध्यक्ष के बीच हुआ। बयान के अनुसार, दोनों देशों ने भारतीय सेना और फ्रांसीसी थलसेना के प्रतिष्ठानों में परस्पर तैनाती अधिकारियों की घोषणा भी की।

हैमर मिसाइलें अत्याधुनिक तकनीक से लैस हैं जो ऊबड़-खाबड़ इलाकों और लंबी दूरी से सटीक वार करने में सक्षम हैं। भारत में इनका निर्माण शुरू होने से न केवल भारतीय वायुसेना की मारक क्षमता बढ़ेगी, बल्कि रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता भी सुनिश्चित होगी।

यह वार्ता भारत और फ्रांस के बीच अटूट विश्वास को दर्शाती है। हिंद महासागर क्षेत्र में शांति बनाए रखने और रक्षा उपकरणों के साझा विकास के मामले में फ्रांस, भारत का सबसे विश्वसनीय साझेदार बनकर उभरा है।

बुलडोजर से माफिया साफ, ब्रह्मोस से दुश्मन, योगी आदित्यनाथ ने गिनाए सरकार के काम

लखनऊ १८/०२ (संवाददाता): उज़र प्रदेश के मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुलडोजर को राज्य की शक्ति का प्रतीक बताया, जो एज़्सप्रेसवे नेटवर्क सहित तीव्र अवसंरचना विकास और माफिया तत्वों के खिलाफ सज़्त कार्रवाई दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। एक मीडिया सज़्मेलन में बोलते हुए, मुज़्यमंत्री योगी ने कहा कि बुलडोजर और ब्रह्मोस एक-दूसरे के पूरक हैं, विरोधाभासी नहीं। उन्होंने कहा कि बुलडोजर उन लोगों की इच्छाशक्ति को दर्शाता है जो राज्य में आपराधिक तत्वों के खिलाफ कार्रवाई चाहते हैं।ब्रह्मोस सुपरसोनिक ज़्रूज मिसाइल के बारे में यूपी सीएम ने इसे भारत की रणनीतिक शक्ति का प्रतीक बताया। विरोधियों को कड़ी चेतावनी देते हुए उन्होंने कहा कि यदि कोई भी भारत की संप्रभुता को चुनौती देने का प्रयास करता है, तो देश निर्णायक जवाब देगा। मुज़्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भारत की आर्थिक प्रगति की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है, जबकि पाकिस्तान उज़र प्रदेश की अर्थव्यवस्था की बराबरी भी नहीं कर सकता।इससे पहले मुज़्यमंत्री योगी ने कहा कि नपिछले नौ वर्षों में उज़र प्रदेश ने एक नई यात्रा शुरू की है। देश और दुनिया इस बात को स्वीकार करते हैं कि उज़र प्रदेश में बदलाव आया है। दुर्भाग्य से, संकीर्ण एजेंडा चलाने वाली सरकारों ने राज्य के भविष्य और यहां की जनता के साथ समझौता किया है। उन्होंने राज्य को अराजकता, अव्यवस्था और अपराध का गढ़ बना दिया है। उन्होंने आगे कहा कि दो इंजन वाली सरकार की स्पष्ट नीतियों, इरादों और सुशासन के प्रति प्रतिबद्धता के कारण हमने उज़र प्रदेश को देश की अर्थव्यवस्था में एक बाधा से एक महत्वपूर्ण विकास के रूप में बदल दिया है। उज़र प्रदेश अब राजस्व घाटे से राजस्व अधिशेष की ओर बढ़ रहा है।

मुज़्यमंत्री ने कहा कि पिछले आठ वर्षों में उज़र प्रदेश में 21 लाख से अधिक पुलिसकर्मियों की भर्ती की गई है, जिनमें से 20 प्रतिशत पद महिलाओं के लिए आरक्षित हैं। उन्होंने यह भी कहा कि सात साल से अधिक की सजा वाले मामलों में अब फोरेंसिक साक्ष्य अनिवार्य है, और 12 ग्रेड ए फोरेंसिक प्रयोगशालाएं पहले से ही कार्यरत हैं।

मायावती की हुंकार, विपक्ष पर साधा निशाना, बोलीं-हमें सज़ा से दूर रखने की साजिश

लखनऊ १८/०२ (संवाददाता): उज़र प्रदेश विधानसभा चुनाव नजदीक आने के साथ ही, बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) प्रमुख मायावती ने बुधवार को अपने समर्थकों को बीएसपी को सज़ा से बाहर करने के उद्देश्य से राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों द्वारा रची जा रही तीव्र साजिशों और हथकंडों के प्रति आगाह किया। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, उन्होंने राज्य और देश भर में डॉ. बी.आर. अंबेडकर के सभी अनुयायियों से आत्मसज़्मान की रक्षा के लिए अंबेडकरवादी आंदोलन को एकजुट करने और मजबूत करने का आह्वान किया। मायावती ने कहा कि जैसे-जैसे उज़र प्रदेश में चुनाव नजदीक आ रहे हैं, हमारे विरोधी हमें सज़ा से दूर रखने और हमारे खिलाफ साजिश रचने के और भी अधिक प्रयास करेंगे। उज़र प्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे देश के सभी अंबेडकरवादियों को आत्मसज़्मान प्राप्ति के लिए डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के आंदोलन को मजबूत करने के लिए निरंतर काम करना चाहिए। इससे पहले, उन्होंने पार्टी को कमजोर करने की साजिशों का आरोप लगाते हुए कहा कि पार्टी कार्यकर्ताओं को इन साजिशों के प्रति सतर्क किया जाएगा। 2027 के उज़र प्रदेश विधानसभा चुनावों के मद्देनजर बसपा कार्यकर्ताओं की बैठक से पहले, मायावती ने कहा कि पार्टी का ध्यान गरीबों, दलितों, आदिवासी लोगों, पिछड़े वर्गों और धार्मिक अल्पसंज़्यकों के मुद्दों पर केंद्रित किया जाएगा। बसपा प्रमुख ने कहा कि उज़र प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए बहुत कम समय बचा है। पार्टी कार्यकर्ताओं को दिशा-निर्देश देने के लिए एक बड़ी और महत्वपूर्ण राज्य स्तरीय बैठक बुलाई गई है... चल रहे एसआईआर अज़्यास के कारण पार्टी के काम में देरी हुई है, लेकिन इसे पूरा करने के लिए कदम उठाए जाएंगे। पार्टी सदस्यों को बसपा को कमजोर करने के लिए विपक्षी दलों द्वारा रची जा रही नई रणनीति और साजिशों के प्रति सतर्क किया जाएगा।

उन्होंने आगे कहा कि इसके अलावा, इस बैठक में दलितों, आदिवासियों, पिछड़े वर्गों, मुसलमानों और अन्य धार्मिक अल्पसंज़्यकों के साथ-साथ किसानों, मजदूरों, कर्मचारियों, व्यापारियों और अन्य कामकाजी लोगों की दयनीय और खराब स्थिति की ओर ध्यान दिलाया जाएगा, जो केंद्र और राज्य सरकारों के तहत मौजूदा सरकारों के साथ-साथ पिछली सरकारों के तहत भी बनी हुई है। यूपी में 2027 में विधानसभा चुनाव होने हैं, जहां बसपा 2022 के चुनावों में खराब प्रदर्शन के बाद वापसी करने की कोशिश करेगी। मायावती के नेतृत्व वाली बसपा, जो कभी राज्य में सज़ा में थी, 2022 के चुनावों में सिर्फ एक सीट तक सिमट गई थी।

एआई समिट 2026 में रोबोट डॉग को अपना बताकर फंसी गलगोटियास विश्वविद्यालय, स्टॉल खाली करने के आदेश

नयी दिल्ली १८/०२ (संवाददाता): राष्ट्रीय राजधानी में चल रहे इंडिया एआई इज़्पैज़्ट समिट (16-20 फरवरी) में एक रोबोटिक डॉग को लेकर उठा विवाद अब एक नया मोड़ ले चुका है। जहाँ एक ओर गलगोटियास विश्वविद्यालय पर आयातित तकनीक को स्वदेशी बताकर पेश करने के गंभीर आरोप लगे हैं, वहीं दूसरी ओर विश्वविद्यालय प्रशासन ने इसे प्रेरणा का जरिया बताकर अपना बचाव किया है।इसमें प्रदर्शित प्रौद्योगिकी की उत्पज़ि और स्वामित्व पर सवाल उठ रहे हैं। सूत्रों के अनुसार, विश्वविद्यालय से तुरंत प्रदर्शनी स्थल छोड़ने को कहा गया। हालांकि विश्वविद्यालय की प्रोफेसर ने इस निर्देश के बारे में जानकारी नहीं होने की बात कही है। विवाद उस समय शुरू हुआ जब गलगोटियास विश्वविद्यालय ने प्रदर्शनी में 'ओरायन' नाम का 'रोबोट डॉग' प्रदर्शित किया।आलोचकों का कहना था कि यह विश्वविद्यालय का स्वदेशी नवाचार नहीं है बल्कि चीन में बना एक रोबोट है। इसके बाद विश्वविद्यालय को सोशल मीडिया पर तीखी आलोचना का सामना करना पड़ा। सूत्रों ने बताया कि विश्वविद्यालय पर आयातित प्रौद्योगिकी को अपनी बताकर पेश करने के आरोप लगे हैं।

इस विवाद पर प्रतिक्रिया देते हुए गलगोटियास विश्वविद्यालय की प्रोफेसर नेहा सिंह ने 'पीटीआई-भाषा' से कहा, '' यह विवाद इसलिए खड़ा हुआ ज़्योंकि शायद बातों को स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं किया गया और इसके पीछे की मंशा को ठीक से समझा नहीं गया।''

उन्होंने कहा, '' 'रोबोट डॉग' के बारे में हम यह दावा नहीं कर सकते कि हमने इसे बनाया है। मैंने सभी को बताया है कि हमने इसे अपने छात्रों के समक्ष इसलिए पेश किया ताकि वे खुद कुछ बेहतर बनाने के लिए प्रेरित हों। हमारा विश्वविद्यालय कृत्रिम मेधा (एआई) के क्षेत्र में अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी प्रदान करके भविष्य के दिग्गज बनाने में योगदान देता है और आगे भी ऐसा करना जारी रखेगा।''

पाकिस्तान की न्यूज़्लियर साइट पर ज़्या हुआ? ऑपरेशन सिंदूर पर सनसनीखेज दावा

नयी दिल्ली १८/०२ (संवाददाता): ज़्या पिछले साल ऑपरेशन सिंदूर के बाद हुए संघर्ष में कोई एक विशेष एयरस्ट्राइक ऐसी थी, जिसने पाकिस्तान को युद्धविराम (सीज़्फायर) के लिए आगे आने पर मजबूर कर दिया? इस सवाल पर लंबे समय से बहस होती रही है। अब दुनिया के प्रमुख एविएशन इतिहासकारों और विश्लेषकों में से एक टॉम कूपर ने बड़ा दावा किया है। भारतीय वायुसेना ने भले ही यह स्वीकार नहीं किया कि उसने पाकिस्तान के किराना हिल्स पर हमला किया था, लेकिन टॉम कूपर का मानना है कि यह ठिकाना निशाना बनाया गया था और उस समय तक पाकिस्तान पूरी तरह दबाव में आ चुका था।

एनडीटीवी को दिए एक विशेष इंटरव्यू में कूपर ने इस बात का खुलासा करते हुए कहा है कि यह ऐसा स्थान है जिस पर आप तब हमला करते हैं, जब आप बिना बहुत ज़्यादा नुकसान पहुंचाए सीधा और साफ संदेश देना चाहते हो। ऐसा मानो पाकिस्तान को ये बताना हो कि हम आपको जहां चाहें, जब चाहें, जितना चाहें, उतनी ताकत से निशाना बना सकते हैं। अब इसे बंद कीजिए। उन्होंने आगे कहा कि उस हमले के समय और उसके बाद के कूटनीतिक घटनाक्रम चाहे वो इस्लामाबाद का वॉशिंगटन और नई दिल्ली से लगातार संपर्क करना और युद्धविराम की दिशा में कदम बढ़ाना हो। कूपर ने कहा कि यह कहना गलत होगा कि पाकिस्तान खुलकर गिड़गिड़ा रहा था, लेकिन हालात ऐसे थे कि अंतत: उसे युद्धविराम की ओर बढ़ना पड़ा। यह पूछे जाने पर कि उनके पास ज़्या सबूत है कि हमला सच में हुआ था, एविएशन एज़्सपर्ट ने ज़ोर देकर कहा कि सिर्फ़ एक सबूत नहीं, बल्कि कई सबूत हैं, जिनमें पाकिस्तानियों के बनाए वीडियो भी शामिल हैं, जिनमें मिसाइलों के निशान आते, नीचे गिरते और पहाड़ी से टकराते दिख रहे हैं। कूपर ने कहा कि पाकिस्तानी एयर फ़ोर्स के 4091वें स्क्वाड्रन के रडार स्टेशन से उठता धुआँ इस थ्योरी को और मज़बूत करता है। उन्होंने कहा कि सबूत इतने साफ़ हैं कि इंडियन एयर फ़ोर्स ने पहले इन रडार स्टेशनों पर हमला किया ताकि पाकिस्तान के हमले का मुकाबला करने की क्षमता को नाकाम किया जा सके और फिर अंडरग्राउंड स्टोरेज फ़ैसिलिटीज़ के कम से कम दो एंट्रेंस पर हमला किया। किराना हिल्स पाकिस्तानी न्यूज़्लियर प्रोग्राम के सेंटरपीस में से एक है। उन्होंने वहाँ लगभग 20-24 नॉन-क्रिटिकल न्यूज़्लियर टेस्ट किए हैं। मेरा मतलब है, यह डिज़्नीलैंड नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि तब तक पाकिस्तान खत्म हो चुका था। उसका ऑपरेशन बनयान-उन-मर्सूस (ऑपरेशन सिंदूर के जवाब में शुरू किया गया) फेल हो गया था। इसे इंडियन एयर डिफेंस ने रोक दिया था, और फिर मई की सुबह इस बड़े स्ट्राइक ने। कूपर ने कहा कि यह स्ट्राइक उन खास वजहों में से एक थी जिसकी वजह से उन्होंने इस लड़ाई को इंडिया की साफ जीत बताया था। उन्होंने समझाया कि आप ऐसी जगहों को तब तक टारगेट नहीं करते जब तक आपको पता न हो कि दुश्मन या दूसरी तरफ से बिना पक्का यकीन के जवाबी हमला नहीं किया जा सकता। कूपर ने कहा कि दूसरा सबूत पाकिस्तान में पर्सनल कॉन्टैज़्ट्स से मिला, जिन्होंने कन्फर्म किया कि फैसिलिटी पर हमला हुआ था। यह पूछे जाने पर कि उन्हें कैसे यकीन है कि किराना हिल्स में न्यूज़्लियर फैसिलिटी है, कूपर ने कहा कि स में एटॉमिक साइंटिस्ट के एक बुलेटिन में इसके बारे में इसी तरह बताया गया था, और इंडिया में एनालिस्ट भी इसी नतीजे पर पहुंचे थे।

विविध समाचार

कूनो नेशनल पार्क में खुशियां! मादा चीता गामिनी ने तीन शावकों को जन्म दिया

कूनो १८/०२ (संवाददाता): मध्य प्रदेश के कूनो राष्ट्रीय उद्यान से वन्यजीव प्रेमियों के लिए एक सुखद खबर आई है। दक्षिण अफ्रीका से लाई गई मादा चीता %गामिनी% ने तीन स्वस्थ शावकों को जन्म दिया है। इस सफल प्रजनन के साथ ही भारत में चीतों के कुनबे में विस्तार हुआ है और अब देश में चीतों की कुल संज़्या बढ़कर 38 हो गई है।केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने बुधवार को यह जानकारी दी। यादव ने सोशल मीडिया मंच 'एज़्स' पर एक पोस्ट में कहा कि चीतों भारत में फिर से बसाने के कार्यक्रम की दिशा में यह एक बड़ी सफलता है। उन्होंने कहा कि दूसरी बार मां बनी गामिनी ने

कूनो राष्ट्रीय उद्यान में तीन शावकों को जन्म दिया है।यादव ने कहा कि यह भारत में चीतों का नौवां सफल प्रजनन है और इसके साथ ही देश में जन्मे जीवित शावकों की संज़्या 27 हो गई है। उन्होंने कहा कि इन नये शावकों के जन्म के साथ ही भारत में चीतों की कुल संज़्या 38 हो गई है। उन्होंने कहा कि यह देश के संरक्षण प्रयासों की ऐतिहासिक सफलता का प्रतीक है।भारत में 1952 में चीतों को विलुप्त घोषित कर दिया गया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शुरू हुए प्रोजेज़्ट चीता के तहत नामीबिया और दक्षिण अफ्रीका से चीते लाए गए थे।

विस्तार- फरवरी 2023 में दक्षिण अफ्रीका से 12 और चीते लाए गए, जिनमें %गामिनी% भी शामिल थी।

कूनो राष्ट्रीय उद्यान अब दुनिया भर में चीतों के संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभर रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि शावकों के जन्म की यह निरंतरता न केवल जैव विविधता के लिए अच्छी है, बल्कि इससे इलाके में ईको-टूरिज्म को भी बढ़ावा मिलेगा। मंत्री भूपेंद्र यादव ने इस सफलता का श्रेय कूनो के फील्ड स्टाफ, वैज्ञानिकों और वन्यजीव विशेषज्ञों की कड़ी मेहनत को दिया है, जो चौबीसों घंटे इन मेहमानों की निगरानी कर रहे हैं।

रेखा गुप्ता ने अगले 4 वर्षों में प्रदूषण कम करने के लिए पेश किया मास्टर प्लान

नयी दिल्ली १८/०२ (संवाददाता): दिल्ली की मुज़्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शुक्रवार को राजधानी में वायु प्रदूषण की गंभीर समस्या से निपटने के लिए एक महत्वाकांक्षी कार्य योजना की घोषणा की। एक उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करने के बाद, उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकार का लक्ष्य अगले चार वर्षों के भीतर दिल्ली के वायुमंडल में मौजूद क्क्रू 2.5 के स्तर को न्यूनतम स्तर पर लाना है।रेखा गुप्ता ने एक उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता करने के बाद कई विभागों को शामिल करते हुए एक कार्य योजना प्रस्तुत की और अधिकारियों को 'स्पष्ट और परिणामों पर केंद्रित' तरीके से काम करने का निर्देश दिया।

पीएम 2.5 हवा में मौजूद सूक्ष्म कण होते हैं जो सांस के साथ शरीर में फेफड़ों तक जा सकते हैं और ये स्वास्थ्य के लिए गंभीर जोखिम पैदा करते हैं। गुप्ता ने कहा, ''प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई लंबी है; हमारी सरकार चार साल की अवधि में वायु प्रदूषण (पीएम 2.5) के स्तर को काफी हद तक कम करने के लिए एक स्पष्ट, और परिणामों पर केंद्रित कार्य योजना पर काम कर रही है।

मुज़्यमंत्री ने दिल्ली के विभिन्न विभागों (लोक निर्माण विभाग, परिवहन, और पर्यावरण मंत्रालय) के अधिकारियों के साथ बैठक कर एक सज़्त रोडमैप तैयार किया है।मुज़्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि PM 2.5 जैसे सूक्ष्म कण, जो फेफड़ों के लिए सबसे घातक माने जाते हैं, सरकार की प्राथमिकता सूची में सबसे ऊपर हैं।अंतर-विभागीय समन्वय- विभिन्न विभागों को %स्पष्ट और परिणामों पर केंद्रित% (ष्टद्यद्गड्डह्ल ड्डठ्ठस्र ऋद्गह्यह्वद्यह्ल-श्रद्भ- द्गठ्ठह्लद्गस्र) तरीके से काम करने के निर्देश दिए गए हैं।सरकार ने अगले चार वर्षों की एक निश्चित अवधि तय की है, जिसके दौरान प्रदूषण नियंत्रण के उपायों का प्रभाव जमीन पर दिखना चाहिए। ये कण इतने छोटे होते हैं कि सांस के जरिए फेफड़ों की गहराई तक चले जाते हैं और रक्त प्रवाह (ब्ल्द्यश्रश्रस्र्द्यह्ल्हद्गड्डद्व) में भी मिल सकते हैं। इससे हृदय रोग, अस्थमा और सांस संबंधी अन्य गंभीर बीमारियाँ होने का खतरा रहता है।

कांग्रेस में गांधीवादी-राहुलवादी की जंग? मणिशंकर अय्यर के बयान पर किरेन रिजिजू का तीखा वार

नयी दिल्ली १८/०२ (संवाददाता): संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को वरिष्ठ नेता मणिशंकर अय्यर के राहुलवादी नहीं वाले बयान के बाद कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि राहुल गांधी के नेतृत्व में पार्टी लगातार कमजोर होती जा रही है। अय्यर के इस बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कि वे गांधीवादी, नेहरूवादी, राजीववादी हैं, लेकिन राहुलवादी नहीं, रिजिजू ने कहा कि कांग्रेस, जिसका नेतृत्व कभी परिपक्व नेताओं ने किया था, अब राहुल गांधी जैसी हो गई है और उनके आसपास के लोग भी उन्हीं का अनुसरण कर रहे हैं। उन्होंने लगातार तीन हार के बाद भी उसी नेता को बनाए रखने पर

आश्चर्य व्यक्त किया।एएनआई को दिए एक साक्षात्कार में रिजिजू ने कहा कि कांग्रेस में मजबूत नेता हुआ करते थे, जिनके भाषण और कार्यों में परिपक्वता होती थी। लेकिन धीरे-धीरे कांग्रेस राहुल गांधी जैसी हो गई है और उनके आसपास के लोग भी उन्हीं की तरह हो गए हैं। हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कांग्रेस इस तरह हो जाएगी- लगातार तीन बार हारने के बाद भी उसी नेता को बनाए रखेगी। भाजपा का कोई नेता तीन बार हारने के बाद नेता नहीं रह सकता। अय्यर की ये टिप्पणियां आगामी केरल विधानसभा चुनावों पर उनकी टिप्पणियों से उपजे राजनीतिक विवाद के बीच आई हैं। अय्यर ने केरल के मुज़्यमंत्री पिनारयी विजयन के नेतृत्व वाले वाम लोकतांत्रिक मोर्चे (एलडीएफ) की सज़ा में वापसी की भविष्यवाणी की, हालांकि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे (यूडीएफ) की जीत को प्राथमिकता दी। उन्होंने कहा कि एक कांग्रेसी होने के नाते, मैं यूडीएफ को सज़ा में देखना चाहता हूं। एक गांधीवादी होने के नाते, मैं सच कह रहा हूं कि पिनारयी सरकार की शानदार उपलज़्धियों के बाद, वाम सरकार का सज़ा में आना तय है।उन्होंने आगे कहा कि केरल के मतदाता भारत के किसी भी अन्य देश के मतदाताओं की तुलना में सबसे बुद्धिमान और सबसे स्वतंत्र विचारक हैं। इसलिए, मैं यूडीएफ को सज़ा में देखना चाहता हूं, लेकिन एक गांधीवादी होने के नाते, जिसे सच बोलना चाहिए, मुझे एलडीएफ के अलावा किसी और के सज़ा में आने की संभावना नहीं दिखती। अय्यर की टिप्पणियों ने विवाद को जन्म दिया, जिसके बाद कांग्रेस ने उनके बयान से खुद को अलग कर लिया और कहा कि अय्यर पार्टी का हिस्सा नहीं हैं। इस पर अय्यर ने कहा कि राहुल गांधी यह भूल गए हैं कि मैं पार्टी का सदस्य हूं। इसलिए, मैं गांधीवादी हूं। मैं नेहरूवादी हूं। मैं राजीववादी हूं, लेकिन मैं राहुलवादी नहीं हूं।

कर्नाटक में मचा हड़कंप, पुलिस ऑफिस में रंगीनमिजाजी का वीडियो वायरल

बेंगलुरु १८/०२ (संवाददाता):कर्नाटक सरकार ने मंगलवार को एक बड़ा और कड़ा कदम उठाते हुए ष्ठत्नक्क रैंक के वरिष्ठ आईपीएस (ढ्ढक्कस्) अधिकारी रामचंद्र राव को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है।

यह कार्रवाई एक आपज़िजनक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद की गई है, जिसमें कथित तौर पर अधिकारी को अपने सरकारी कार्यालय के भीतर विभिन्न महिलाओं के साथ आपज़िजनक स्थिति में देखा गया था। यह फैसला ष्ठत्नक्क रैंक के अधिकारी के सरकारी ऑफिस में कथित व्यवहार को लेकर बढ़ते विवाद और लोगों के गुस्से के बीच आया। यह विवाद मुज़्यमंत्री सिद्धारमैया के ऑफिस तक पहुंच गया, जिन्होंने सोमवार को संबंधित विभाग से जानकारी ली। एक दिन बाद, राज्य प्रशासन ने सीनियर पुलिस अधिकारी को सस्पेंड करने का फैसला किया।

इस घटना ने राज्य के राजनीतिक गलियारों और पुलिस महकमे में तूफान खड़ा कर दिया है। सूत्रों के अनुसार, मुज़्यमंत्री सिद्धारमैया ने जब स्वयं फुटेज देखी, तो वे बेहद गुस्से में थे। उन्होंने विभाग से जवाब तलब किया कि पुलिस विभाग के सर्वोच्च पदों पर बैठे अधिकारी ऐसी गतिविधियों में कैसे शामिल हो सकते हैं।

अचानक 114 राफेल विमान खरीदने की जरूरत ज़्यों पड़ गयी? इस सौदे में भारत ने ज़्या शर्तें रखी हैं?

नयी दिल्ली १८/०२ (संवाददाता): भारत की सेनाओं को आधुनिक हथियारों और अत्याधुनिक तकनीक से लैस करने, सीमाओं की सुरक्षा को अभेद्य बनाने और हर मोर्चे पर दुश्मन को करारा जवाब देने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कभी पीछे नहीं रहते। राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर उनकी नीति साफ है कि ताकत ही शांति की सबसे मजबूत गारंटी होती है। इसी सोच के तहत भारतीय वायुसेना की मारक क्षमता को नई ऊंचाइयों पर ले जाने वाला एक और निर्णायक कदम अब आकार ले रहा है। राफेल लड़ाकू विमानों की संज़्या बढ़ाने की दिशा में सरकार की ताजा पहल न केवल वायुसेना की कमजोर पड़ती स्क्वाड्रन ताकत को संबल देगी, बल्कि बदलते सामरिक परिदृश्य में भारत को निर्णायक बढ़त भी दिलाएगी।

हम आपको बता दें कि रक्षा सचिव राजेश कुमार सिंह की अध्यक्षता वाले रक्षा खरीद बोर्ड ने फ्रांस की कंपनी डसॉल्ट एविएशन से 114 राफेल लड़ाकू विमानों की खरीद के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह मंजूरी औपचारिक प्रक्रिया का पहला ठोस चरण है, जिसके बाद प्रस्ताव रक्षा अधिग्रहण परिषद के सामने जाएगा और अंतत- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता वाली कैबिनेट समिति से अंतिम स्वीकृति मिलेगी। अनुमान है कि यह सौदा करीब साढ़े तीन लाख करोड़ रुपये का होगा, जो भारत का अब तक का सबसे बड़ा रक्षा सौदा

बन सकता है।

यह मंजूरी ऐसे समय आई है जब फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के भारत दौरे की तैयारी चल रही है। यदि मूल्य वार्ता और अन्य स्वीकृतियां समय पर पूरी होती हैं तो दोनों देशों के बीच अंतर सरकारी समझौते के तहत सौदे पर हस्ताक्षर संभव हैं। इस मॉडल में बिचौलियों की कोई भूमिका नहीं होगी और सीधे आपूर्ति सुनिश्चित होगी।

हम आपको बता दें कि भारतीय वायुसेना पहले ही 36 राफेल विमानों का संचालन कर रही है और नौसेना ने भी इसी श्रेणी के 26 समुद्री संस्करण मंगाए हैं। नए सौदे के तहत 18 विमान सीधे उड़ान योग्य स्थिति में मिलेंगे, जबकि शेष का निर्माण भारत में होगा। नागपुर स्थित डसॉल्ट रिलायंस एयरोस्पेस में अंतिम संयोजन लाइन स्थापित होने की तैयारी है, जहां टाटा, महिंद्रा और डायनामेटिक टेज़्नोलॉजीज जैसी भारतीय कंपनियां साझेदार बनेंगी। स्वदेशी सामग्री की हिस्सेदारी 55 से 60 प्रतिशत तक रहने की उज़्मीद है।

हम आपको यह भी बता दें कि इस सौदे में भारत ने कुछ बड़ी शर्तें रखी हैं, जिनमें सभी विमानों पर भारतीय हथियारों और मिसाइलों का एकीकरण, सुरक्षित डेटा लिंक और एयरफ्रेम, इंजन तथा एवियोनिज़्स में प्रौद्योगिकी हस्तांतरण शामिल है। राफेल के उन्नत स्न-4 और भविष्य के स्न-5 संस्करणों की मांग भी रखी गई है, जिनमें नई पीढ़ी का एईएसए रडार, बेहतर आत्म सुरक्षा प्रणाली, लंबी दूरी की मारक क्षमता और कृत्रिम बुद्धिमज़ा आधारित सहायता शामिल होगी। यह सब ऐसे समय हो रहा है जब वायुसेना की स्क्वाड्रन संज़्या घटकर 29 रह गई है, जबकि स्वीकृत संज़्या 42 है। मिग-21 जैसे पुराने विमानों की विदाई और तेजस परियोजना में देरी ने यह अंतर और गहरा कर दिया है। चीन और पाकिस्तान के साथ दो मोर्चों की चुनौती और बांग्लादेश की ओर से उभरती सुरक्षा चिंता ने इस खरीद को अनिवार्य बना दिया है।

देखा जाये तो राफेल की बहु भूमिका क्षमता, गहरी मार, नेटवर्क केंद्रित युद्ध क्षमता और घातक सटीकता भारतीय वायुसेना को वह धार देती है जिसकी आज सज़्त जरूरत है।

अरब सागर में उठ रहे खौलते पानी के बुलबुले, रहस्यमयी हलचल से गुजरात तट पर मचा हड़कंप, कुछ बड़ा होने की आशंका?

अहमदाबाद १८/०२ (संवाददाता): गुजरात तट से सटे अरब सागर के गहरे पानी में सोमवार को एक ऐसी हलचल देखी गई जिसने सबको स्तज़्ध कर दिया है। पालघर जिले के आपदा प्रबंधन विभाग को मछुआरों से कुछ ऐसे वीडियो मिले हैं, जिनमें समुद्र का पानी किसी विशाल कड़ाही की तरह %उबलता% हुआ दिखाई दे रहा है। मछुआरों के अनुसार, यह हलचल अचानक शुरू हुई और समुद्र के एक बड़े हिस्से को कवर कर लिया। पानी की सतह पर सफेद झाग और बड़े-बड़े बुलबुले उठ रहे थे, जो आमतौर पर पानी के नीचे भारी दबाव या गैस निकलने पर देखे जाते हैं। पालघर जिले के एक अधिकारी ने सोमवार को यह जानकारी देते हुए बताया कि मछुआरों द्वारा रिकॉर्ड किए गए वीडियो में समुद्र के बड़े हिस्से में पानी में हलचल होनेऔर बुलबुले निकलते दिख रहा है। उनके अनुसार, ऐसा लगता है मानो पानी 'उबल' रहा हो। इस असामान्य गतिविधि ने क्षेत्र में आशंकाएं बढ़ा दी हैं।

पालघर जिला आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ के प्रमुख विवेकानंद कदम ने इस घटना की गहन जांच की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, ''देखी गई हलचल अत्यंत असामान्य है और इस पर विशेष समुद्री तथा औद्योगिक एजेंसियों का तत्काल ध्यान देना आवश्यक है।'' कदम ने बताया कि यह

क्षेत्र समुद्री परिवहन मार्गों और मछली पकड़ने के प्रमुख इलाकों के करीब स्थित है। उन्होंने कहा कि ऐसे में आशंका जतायी जा रही है कि यह घटना समुद्र तल से गैस रिसाव, पानी के नीचे भू-वैज्ञानिक गतिविधियों या समुद्र के नीचे बिछी पाइपलाइनों से रिसाव के कारण हो सकती है।

उन्होंने कहा कि जिला आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ इस बात का पता लगाने के लिए समुद्री प्राधिकरणों के साथ समन्वय कर रहा है कि यह हलचल प्राकृतिक भू-वैज्ञानिक बदलावों का नतीजा है या किसी मानव-जनित औद्योगिक घटना का संकेत है। अधिकारी ने बताया कि एहतियात के तौर पर उक्त जगह के आसपास से गुजरने वाले जहाजों और मछली पकड़ने वाली नौकाओं को अत्यधिक सतर्कता बरतने की सलाह दी गई है।पालघर जिला आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ के प्रमुख विवेकानंद कदम ने इस पर चिंता जताते हुए जांच के लिए तीन प्रमुख थ्योरी दी हैं-

गैस रिसाव-समुद्र के नीचे प्राकृतिक गैस के भंडार हो सकते हैं, जहां से रिसाव के कारण पानी में बुलबुले उठ रहे हों।

पाइपलाइन में खराबी- इस क्षेत्र में तेल और गैस कंपनियों (जैसे ह्रह्लष्ट) की कई अंडरवॉटर पाइपलाइनें बिछी हुई हैं। आशंका है कि किसी पाइपलाइन में दरार आने से यह दबाव बन रहा हो।

भू-वैज्ञानिक गतिविधियां - समुद्र तल के नीचे भूकंपीय हलचल या ज्वालामुखी जैसी गतिविधियों के कारण भी पानी का तापमान और दबाव बदल सकता है।सबमरीन गैस लीक - सबसे बड़ी आशंका समुद्र के नीचे बिछी प्राकृतिक गैस की पाइपलाइनों में रिसाव की है। इस क्षेत्र में ह्रह्लष्ट जैसी कंपनियों का बड़ा नेटवर्क है। अगर यह रिसाव है, तो यह आग लगने या बड़े विस्फोट का कारण बन सकता है।मीथेन उत्सर्जन - वैज्ञानिकों का मानना है कि समुद्र तल के नीचे जमा मीथेन गैस कभी-कभी भूगर्भीय दबाव के कारण बाहर निकलने लगती है, जिससे पानी %उबलता% हुआ प्रतीत होता है।

ज्वालामुखी या विवर्तनिक गतिविधि -ज़्या समुद्र के नीचे कोई छोटा ज्वालामुखी सक्रिय हो रहा है? या फिर समुद्र तल की प्लेटों में कोई दरार आई है? पालघर जिला आपदा प्रबंधन प्रमुख विवेकानंद कदम ने इन भू-वैज्ञानिक बदलावों की जांच की मांग की है।औद्योगिक अपशिष्ट - एक संभावना यह भी है कि किसी बड़े जहाज या तटीय कंपनी ने भारी मात्रा में रसायनिक दबाव छोड़ा हो, हालांकि बुलबुलों की तीव्रता इसे कम संभावित बनाती है।

प्रशासनिक मुस्तैदी और चेतावनी- जहाजों के लिए अलर्ट-पालघर और गुजरात तट के बीच से गुजरने वाले सभी व्यापारिक जहाजों और नौकाओं को इस %हॉटस्पॉट% से दूर रहने को कहा गया है।एजेंसियों की जांच-समुद्री सुरक्षा एजेंसियां और तटरक्षक बल इस बात का पता लगा रहे हैं कि ज़्या उस क्षेत्र में किसी पाइपलाइन का दबाव कम हुआ है।

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

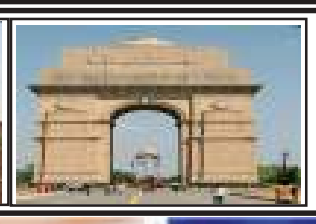

विविध समाचार

सर्दियों में ज्यादा परेशान करता है सोरायसिस

सर्दियों के मौसम में स्किन से जुड़ी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। अगर किसी को सोरायसिस है तो उसे सर्दियों में काफी ज्यादा परेशानी होती है। सोरायसिस एक त्वचा से जुड़ी बीमारी है जिसमें त्वचा पर लाल रंग की पपड़ीदार चकत्ते बनने लगते हैं। इसके कारण प्रभावित एरिया में खुजली सूजन बनी रहती है। यह एक ऑटोइम्यून विकार है। बहुत सारे लोगों का सवाल होता है कि आखिर क्यों सर्दियों में सोरायसिस ज्यादा परेशान करता है। आईए जानते हैं इस बारे में हेल्थ एक्सपर्ट से।

एक्सपर्ट बताती है कि सर्दियों में हवा में नमी में कमी हो जाती है। वातावरण बहुत सूखा हो जाता है और यह शुष्क वातावरण त्वचा को प्रभावित करता है। जिससे सोरायसिस के लक्षण जैसे खुजली जलन और सूजन बढ़ जाते हैं। जब तापमान गिरता है तो रक्त वाहिकाएं संकुचित हो जाती है इससे त्वचा में रक्त का संचार धीमा हो जाता है। इसके कारण त्वचा में नमी और पोषक तत्वों की आपूर्ति कम हो जाती है। इससे भी सोरायसिस के लक्षण बिगड़ जाते हैं।
सर्दियों में धूप की कमी हो जाती है जबकि विटामिन डी त्वचा के स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। इसकी कमी से सोरायसिस के लक्षण बढ़ सकते हैं।
अक्सर ठंड से बचने के लिए लोग गर्म पानी से नहाते हैं, लेकिन गरम पानी त्वचा को और अधिक शुष्क बना सकता है। इससे त्वचा में रूखापन आ जाता है और सोरायसिस के लक्षण बिगड़ जाते हैं।
सर्दियों में हम गर्म कपड़े पहनते हैं, जब ऊनी और गर्म कपड़े सीधे शरीर के संपर्क में आते हैं तो त्वचा में फ्रिक्शन बढ़ती है और यह खुजली का कारण बनता है, जिससे सोरायसिस उत्तेजित हो जाता है।
सर्दियों के मौसम में इम्युनिटी कमजोर हो जाती है इसके कारण भी सोरायसिस के लक्षण बढ़ सकते हैं।

शरीर के पोषक तत्वों को खत्म कर सकती है गैस और एसिडिटी की दवाएं

अगर आप गैस और एसिडिटी जैसी समस्या के लिए दवाएं खा रहे हैं, तो इसे एकदम बंद कर दें, यह शरीर के पोषक तत्वों को खत्म कर सकती हैं।

एसिडिटी और गैस बनना आम समस्याएं हैं, जिनसे रोजाना बहुत से लोग परेशान रहते हैं। अगर आप इससे राहत पाने के लिए पैन्टोजेन जैसी कोई दवाएं ले रहे हैं, तो आप बड़ी गलती कर रहे हैं। इनके अधिक सेवन से आपके शरीर में विटामिन बी12, मैग्नीशियम, कैल्शियम, विटामिन डी सहित कई सारे पोषक तत्वों की कमी आ सकती है जिससे शरीर में इनके कई प्रभाव देखने को मिलते हैं। इन दवाओं के अधिक सेवन से शरीर में कमजोरी होना, थकान, कमजोरी और ऊर्जा की कमी जैसे लक्षण महसूस हो सकते हैं। अगर आप एसिडिटी सहित पेट की अन्य समस्याओं जैसे अपच, सीने में जलन, एसिड रिफ्लक्स, कब्ज, पेट फूलना आदि से राहत पाना चाहते हैं, तो आपको दवाओं पर डिपेंड होने की बजाय कुछ घरेलू उपाय आजमाने चाहिए।

एसिडिटी के लक्षण

- सीने में जलन होना, खासकर खाने के बाद, जो रात में या लेटते समय बदतर हो सकती है
- भोजन या खट्टे तरल पदार्थ वापस आना
- ऊपरी पेट या सीने में दर्द
- निगलने में परेशानी
- पेट फूलना और भारीपन

कच्चा जीरा है एसिडिटी का तगड़ा इलाज

एसिडिटी से राहत पाने के लिए आप जीरे का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए आप खाने से पहले थोड़ा सा कच्चा जीरा चबाएं और थोड़ा गुनगुना पानी पी लें, जब तक वो चबना जाए।

ठंडा दूध

बहुत थोड़ी मात्रा में ठंडा दूध लें और उसमें आधा चम्मच गुलकंद मिक्स कर दें। इस मिश्रण को लेने से आपको एसिडिटी को बिना दवाओं के ठीक करने में मदद मिल सकती है।

एंटासिड से हो जाएं सावधान

सुबह खाली पेट एसिड की दवाएं लेना आपकी सेहत को बर्बाद कर सकता है। बाजार में एंटासिड दवाएं धड़ल्ले से बिक रही हैं जोकि आपकी सेहत के लिए खतरनाक हैं।

आपको डॉक्टर के पास कब जाना चाहिए

अगर आपको यह उपाय आजमाने के बाद भी आराम नहीं मिल रहा और लक्षण बिगड़ते जा रहे हैं, तो आपको तुरंत डॉक्टर के पास जाना चाहिए। इसके अलावा आपको सांस लेने में तकलीफ हो, या जबड़े या बांह में दर्द हो रहा है, तो सावधान रहें क्योंकि यह दिल का दौरा पड़ने के संकेत और लक्षण हो सकते हैं।

आंतों से जुड़ी एक गंभीर समस्या है अल्सरेटिव कोलाइटिस

अल्सरेटिव कोलाइटिस आंतों से जुड़ी एक गंभीर समस्या है जो आगे चलकर कोलन कैंसर का कारण भी बन सकता है। आइए जानते हैं इसके कारण, लक्षण क्या होते है। खराब जीवनशैली के कारण आंतों से जुड़ी कई तरह की समस्या देखने को मिल रही है, इनमें से एक है अल्सरेटिव कोलाइटिस, यह एक क्रोनिक बीमारी है,जिससे जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। आइए जानते हैं इसके लक्षण और कारण क्या होते हैं।

क्या है अल्सरेटिव कोलाइटिस?

एक्सपर्ट बताते हैं कि अल्सरेटिव कोलाइटिस एक गंभीर समस्या है, जिसमें बड़ी आंत यानी कि कोलन में सूजन हो जाती है और अल्सर हो जाता है। इसे इन्फ्लेमेटरी बॉवेल डिजीज के नाम से भी जाना जाता है। आमतौर पर यह बीमारी मलाशय को प्रभावित करती है। समय के साथ यह पूरे कोलन को भी प्रभावित कर सकती है। अल्सरेटिव कोलाइटिस छोटी आंतों को भी प्रभावित करता है। यह बीमारी किसी भी उम्र में शुरू हो सकती है। पहले तो यह धीरे-धीरे विकसित होती है, इसके बाद इसके लक्षण गंभीर होते हैं। इसके कारण इम्यूनिटी बुरी तरह से खराब हो जाती है। यह कोलन कैंसर का कारण भी बन सकता है। बीमारी का सटीक कारण अब तक मालूम नहीं है, लेकिन कुछ ऐसे कारण है जो इसकी विकास में भूमिका निभा सकते हैं।

अल्सरेटिव कोलाइटिस के कारण

- डाइट
- जैनेटिक म्यूटेशन
- स्मोकिंग

अल्सरेटिव कोलाइटिस के लक्षण

- डायरिया
- बैली पेन
- बार बार मोशन पास करने की इच्छा
- वजन कम होना
- मलाशय से खून आना
- बुखार होना
- सीवर डिहाइड्रेशन
- बोन लॉस

पेट में रुक-रुकर हो रहा दर्द तो नजरअंदाज न करें...

कोलन कैंसर खतरनाक हो गया है और अब 50 साल से पहले ही शिकार बना सकता है। इसके कुछ लक्षणों को हल्के नहीं लेना चाहिए, जिसमें पेट दर्द भी शामिल है। पेट दर्द के पीछे कोलन कैंसर भी वजह हो सकता है। आइए इसके शुरुआती लक्षणों के बारे में जानते हैं।
जीवनशैली और पर्यावरण हमारे शरीर पर हर पल असर करता रहता है। इनकी क्वालिटी खराब होने पर कई बीमारियों का खतरा बढ़ गया है। युवाओं में कोलन कैंसर निकलना भी इसी का एक परिणाम है। डॉ. ने बताया कि हालिया अध्ययनों से पता चलता है कि 50 वर्ष से कम उम्र के एडल्ट्स में कोलन कैंसर का रेट काफी तेजी से बढ़ा है। हालांकि इस बढ़ोतरी के पीछे के कारणों की अभी भी जांच की जा रही है, मगर जीवनशैली में बदलाव, आहार, आनुवंशिकी और पर्यावरणीय प्रभाव जैसी चीजों पर शक किया जा रहा है। इस बदलाव की वजह से कोलन कैंसर के संकेतों के बारे में पता होना बहुत जरूरी है। डॉ. के अनुसार पेट में क्रोनिक या रुक-रुकर हो रहा दर्द, ऐंठन या दर्द महसूस हो रहा हो तो नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। यह दिक्कत कोलन के अंदर हो रही समस्याओं का संकेत हो सकती है।

बावेल हैबिट में बदलाव

बावेल हैबिट में होने वाले बदलाव पर ध्यान दें। लगातार दस्त, कब्ज या मल में बदलाव आदि कोलन कैंसर के शुरुआती चेतावनी संकेत हो सकते हैं।

मलाशय से खून निकलना

मल में रक्त या मलाशय से रक्तस्राव एक चिंताजनक लक्षण है जिसके लिए तुरंत चिकित्सा की जरूरत होती है। इसे बवासीर जैसी छोटी समस्याओं से अलग करना महत्वपूर्ण है।

बेवजह वजन घटना

बिना किसी साफ कारण के अचानक वजन घटना कोलन कैंसर के लिए एक खतरे का संकेत हो सकता है, क्योंकि यह कैंसर के विकास के बारे में बताता है।

थकान और कमजोरी

लंबे समय से थकान और कमजोरी की सामान्य भावना जब ऊपर बताए किसी लक्षण के साथ हो तो किसी खतरे की चेतावनी हो सकती है।

जोखिम बढ़ने के कारण

पारिवारिक इतिहास, आहार और जीवनशैली में अस्वस्थ बदलाव, मोटापा व अधिक बीएमआई और क्रोनिक बीमारी इसका जोखिम बढ़ा सकती है।

शुरुआती जांच और स्क्रीनिंग

युवा वयस्कों में कोलन कैंसर की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए, इसका शीघ्र पता लगाना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इसके लिए लक्षण दिखने या खतरा महसूस होने पर कोलोनोस्कोपी, स्टूल टेस्ट और सीटी कोलोनोग्राफी की जा सकती है।

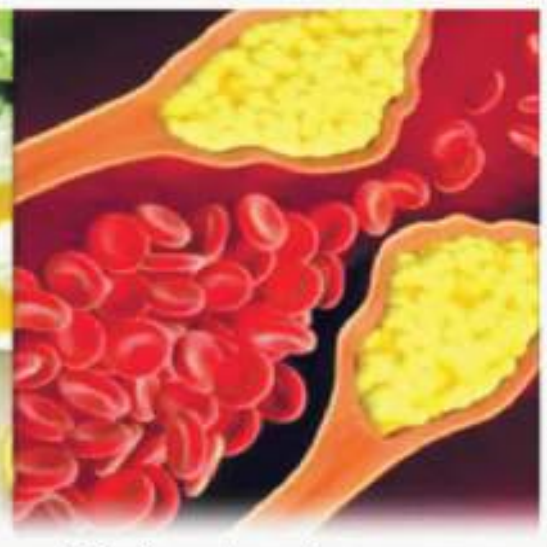

हाई कोलेस्ट्रॉल की छुट्टी कर देंगे 3 हेल्दी ब्रेकफास्ट

शरीर में अगर कोलेस्ट्रॉल हाई हो जाए तो हार्ट अटैक, फैटी लिवर और स्ट्रोक जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इसे डाइट में सुधार करके, एक्सरसाइज और अन्य तरीकों से कम किया जा सकता है। आइए जानें कोलेस्ट्रॉल को कम करने के लिए सुबह क्या खाना चाहिए।

हाई कोलेस्ट्रॉल आज के समय में एक आम समस्या बन गई है। जो खराब लाइफस्टाइल, खानपान की खराब आदतों, स्मोकिंग, शराब पीने, मोटापा, कम फिजिकल एक्टिव रहने समेत अन्य वजहों से हो सकती है।
दुनियाभर के तमाम देशों में लोग बड़ी संख्या में हाई कोलेस्ट्रॉल से जूझ रहे हैं। रिपोर्ट्स की माने तो अमेरिका में करीब 71 मिलियन लोगों में हाई कोलेस्ट्रॉल है, जबकि भारत में लगभग 31 फीसदी लोग इस प्रॉब्लम का सामना कर रहे हैं। हाई कोलेस्ट्रॉल तब होता है जब खून में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बहुत ज्यादा हो जाती है। आमतौर पर, कुल कोलेस्ट्रॉल 200 mg/dL या उससे अधिक हो जाता है तो इसे हाई कोलेस्ट्रॉल माना जाता है। वहीं, एक रिपोर्ट में बताया गया है कि अगर कोलेस्ट्रॉल हाई हो जाए तो हार्ट अटैक, हार्ट डिजीज, फैटी लिवर और स्ट्रोक जैसी समस्याएं होने के चांसेस बढ़ जाते हैं। हेल्थ एक्सपर्ट्स का कहना है कि हाई कोलेस्ट्रॉल को कुछ दवाओं, एक्सरसाइज, हेल्दी वेट मैनेज करके और डाइट में सुधार करके कम किया जा सकता है। आज हम आपको 3 ऐसे हेल्दी ब्रेकफास्ट के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनके सेवन से आप अपने बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल को कम कर सकते हैं।

क्या होता है कोलेस्ट्रॉल

कोलेस्ट्रॉल शरीर में पाया जाने वाला एक मोम जैसा पदार्थ होता है। जो शरीर के लिए बेहद जरूरी होता है। कोलेस्ट्रॉल दो तरह के होते हैं, गुड कोलेस्ट्रॉलऔर बैड कोलेस्ट्रॉल। शरीर में गुड कोलेस्ट्रॉल का कम होना और बैड कोलेस्ट्रॉल का बढ़ना दोनों ही घातक हो सकता है।

हाई कोलेस्ट्रॉल में कौन सा ब्रेकफास्ट करें

अगर बढ़े हुए कोलेस्ट्रॉल को कम करना है तो जरूरी है कि आज ही आप अपने खानपान की आदतों में बदलाव लाएं। जंक फूड और प्रोसेस्ड फूड को छोड़ने के साथ ही हेल्दी चीजों को डाइट में शामिल करें। बैड कोलेस्ट्रॉल को घटाने के लिए एक मशहूर डाइटिशियन ने बेस्ट ब्रेकफास्ट आइडियाज शेयर किए हैं। उनमें से हम आपको 3 बेस्ट ब्रेकफास्ट के बारे में बताने जा रहे हैं।

होल ग्रेन टोस्ट

खुशी की बात ये है कि अगर आपको होल ग्रेन टोस्ट पसंद है तो हाई कोलेस्ट्रॉल में आप उसे खाना जारी रख सकते हैं। जी हां, डाइटिशियन ने अपनी कोलेस्ट्रॉल कम करने वाले ब्रेकफास्ट की लिस्ट में होल ग्रेन टोस्ट को भी शामिल किया है। उन्होंने बताया कोलेस्ट्रॉल को घटाने के लिए होल ग्रेन टोस्ट को आप पीनट बटर और बेरीज का सेवन कर सकते हैं।

सारडो विद स्मोक्ड सैल्मन

अगर आप नॉनवेज खाना पसंद करते हैं तो अपनी सुबह की मील में आप सारडो के साथ स्मोक्ड सैल्मन खा सकते हैं। दरअसल, सैल्मन मछली में मौजूद ओमेगा-3 फैटी एसिड, कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करता है।

ग्रीक योगर्ट

इसके अलावा हाई कोलेस्ट्रॉल को कम करने के लिए एक और टेस्टी ब्रेकफास्ट को आप अपनी डाइट का हिस्सा बना सकते हैं। ये है ग्रेनोला, अखरोट और होममेड जैम के साथ ग्रीक योगर्ट। इनमें ऐसे कई गुण मौजूद होते हैं, जो कोलेस्ट्रॉल लेवल को घटाने में आपकी मदद करेंगे।

कलिंग समाचार

संपादकीय

गुरूवार 19 फरवरी 2026

मोदी के हाथ में त्रिशूल और डमरू

गले में भगवा गमछा, माथे पर त्रिपुंड और हाथों में भगवान शिव की तरह त्रिशूल और डमरू पकड़े हुए देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का नया अवतार सामने आया है। अलग–अलग विचारधारा और कार्यशैली के प्रधानमंत्री देश ने देखे हैं, लेकिन पहली बार एक ऐसे प्रधानमंत्री को देश देख रहा है, जिनकी वक्त–वक्त पर बदलती वेशभूषा फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता की याद दिलाती है। बहरहाल, प्रधानमंत्री मोदी कोई भी काम अकारण नहीं करते। इस बार हिंदुत्व का जयघोष करने वाली मुद्रा उन्होंने सोमनाथ में 8 से 11 जनवरी तक आयोजित सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के लिए धारण की। इस उत्सव को भव्य बनाने में गुजरात की भाजपा सरकार ने कोई कसर नहीं छोड़ी क्योंकि इसके गहरे राजनैतिक निहितार्थ भी हैं। एक हजार साल पहले1026 में सोमनाथ मंदिर पर पहला हमला हुआ था। उसी याद में यह उत्सव मनाया जा रहा है। गौरतलब है कि भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में सर्वप्रथम ज्योतिर्लिंग सोमनाथ का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व है। मान्यता है कि इसका निर्माण स्वयं चन्द्रदेव ने किया था, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में भी है। लोककथाओं के अनुसार यहीं श्रीकृष्ण ने देहत्याग किया था। यह ऐतिहासिक मंदिर अब भाजपा के लिए राजनैतिक महत्व का भी बन गया है। प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआईबी) के अनुसार, यह उत्सव विनाश को याद करते हुए नहीं बल्कि आस्था, सांस्कृतिक आत्मस मान और पुनर्जन्म की भावना के स मान के रूप में मनाया जा रहा है। दरअसल प्राचीन सोमनाथ मंदिर में कई गांवों का चढ़ावा आता था, जिससे यहां सोने, चांदी, बड़ी सं या में मोतियों और अनमोल रत्नों समेत बड़ी धनसंपदा सदियों से जमा थी और इस वजह से विदेशी हमलावर इसे लूटना चाहते थे। महमूद गजनी ने 1026 में जब भारत पर एक और आक्रमण किया तो उस समय गुजरात में चालुक्य वंश के राजा भीम प्रथम का शासन था, महमूद गजनी ने तभी सोमनाथ पर पहला आक्रमण किया था। इसके बाद कई और शासकों और आक्रांताओं ने सोमनाथ मंदिर पर हमले किए और इसकी धन संपदा को लूटा। मध्ययुग का वह दौर ऐसा ही था, जिसमें राज्य और शक्ति बढ़ाने के लिए शासक खुलेआम लूटपाट करते थे। अभी अमेरिका इसी तरह के काम कर रहा है, बस इसमें लोकतंत्र का आवरण ओढ़ लिया है और सीधे–सीधे गैर धार्मिक स्थल को निशाना नहीं बनाया जा रहा है। खैर, सोमनाथ पर कम से कम 16 बार आक्रमण और देश के दूसरे हिंदू धर्मस्थानों पर हुए आक्रमण के बावजूद देश से न हिंदू धर्म खत्म हुआ, न हिंदुओं के अस्तित्व पर कोई खतरा आया। लेकिन मोदीराज में आस्था के पुनर्जन्म के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च करके सोमनाथ स्वाभिमान पर्व मनाया गया। सोमनाथ पर भाजपा पहले भी सफल दांव खेल चुकी है। दिसंबर 1989 के लोकसभा चुनावों में भाजपा ने पहली बार अपने चुनावी घोषणापत्र में राम मंदिर (अयोध्या) निर्माण के मुद्दे को शामिल किया था। तब उसकी लोकसभा सीटें बढ़ीं, फिर 1991 में लाल कृष्ण आडवाणी ने सोमनाथ से अयोध्या तक अपनी रथ यात्रा शुरू की, जिसके बाद भारत में वही धार्मिक विभेद की खाई गहरी होनी शुरु हुई, जो भाजपा की सत्ता के लिए जरूरी थी। 1992 में बाबरी मस्जिद तोड़ी गई। फिर 1996 में भाजपा को केंद्र की सत्ता में आने का मौका पहली बार मिला। और अब नरेन्द्र मोदी के आने के बाद तो 12 सालों से भाजपा के पास सत्ता है। ध्यान रहे कि आडवाणी की रथयात्रा में गुजरात में नरेन्द्र मोदी को बड़ी जि मेदारी दी गई थी, जिसे मोदी ने सफलतापूर्वक निभाया। सवाल भाजपा को सत्ता में लाने का था, तो नरेन्द्र मोदी ने पूरी तैयारी से अपनी जि मेदारी निभाई। लेकिन अभी प्रधानमंत्री के तौर पर तीसरा कार्यकाल संभालने के बाद मोदी लगातार अपने पद की गरिमा निभाने में नाकाम दिख रहे हैं। इंदौर में कई लोग दूषित पेयजल से मर गए, मोदी ने उफ तक नहीं की। दिल्ली से लेकर कई शहरों में हवा जानलेवा बनी हुई है। उन्नाव की पीड़िता इंसाफ के लिए लड़ती रही, मोदी चुपचाप देखते रहे। अभी अंकिता भंडारी मामले में लोगों ने आक्रोश न दिखाया होता तो भाजपा सरकार बेफिक्र बैठी रहती। उत्तरप्रदेश में लगातार महिला उत्पीड़न के मामले सामने आ रहे हैं।

मुस्लिम सावधान:ओवैसी बंगाल में हिजाबी मुख्यमंत्री का शिगूफा छेड़ सकते हैं!

शकील अख्तर

देश में जहां अभी केन्द्र सरकार में एक भी मुसलमान मंत्री तक नहीं है वहां हिजाबी महिला के प्रधानमंत्री पद तक पहुंच जाने की बात करना सिवाय जज्बात भड़काने के और क्या है? मुस्लिम महिला के सशक्तिकरण के बहुत सारे काम होना है। प्रधानमंत्री सिर्फ एक ही बनेगी लेकिन नौकरी पाकर बहुत बड़ी तादाद में महिलाएं मजबूत होंगी। महिला शिक्षा महिलाओं के आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने पर ओवैसी कभी बात नहीं करते हैं। असदउद्दीन ओवैसी को बड़ा बैरिस्टर कहकर उनका महिमामंडन किया जाता है। लेकिन एक सामान्य वकील भी जानता है कि उन्हें किसी ऐसे तर्क का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए जो उसके क्लाइंट के लिए ही उल्टा पड़ सकता हो। एक बार नहीं दूसरी बार फिर ओवैसी ने कहा है कि एक दिन हिजाब पहनने वाली महिला भारत की प्रधानमंत्री बनेगी।

भारत का प्रधानमंत्री कोई भी बन सकता है। संविधान कहता है। मगर अभी तक कोई दलित भी नहीं बन सका है। अपने व्यक्तिगत करिश्मे के दम पर मायावती को यह मौका मिल सकता था। मगर डर की राजनीति की वजह से उन्होंने यह गंवा दिया। बड़ी पार्टियों में से भाजपा अपनी मनुवादी सोच के कारण कभी किसी दलित को यह मौका नहीं दे सकती है। उसकी तो आरक्षण और उस संविधान को भी जिसमें आरक्षण की व्यवस्था की गई है खत्म करने की मंशा है। मगर मौका नहीं मिल रहा है। 2024 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी चार सौ पार मांगे थे मगर अभी थोड़ा होश में बची जनता और विपक्ष के एकजुट होकर चुनाव लड़ने की वजह से उनकी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। वहां दलित प्रधानमंत्री की बात कोई सोच भी नहीं सकता। संघ की और बीजेपी की पूरी राजनीति सामाजिक न्याय के सिद्धांत के विरोध में है। वापस पुरानी व्यवस्था बनाना। जिसे वह समरसता कहती है। यह शब्द संघ का ही गढ़ा हुआ है। मगर जानकारी के अभाव में कांग्रेस और दूसरी पार्टियों के नेता, लेखक पत्रकार भी इस शब्द का उपयोग सामाजिक न्याय के संदर्भ में करते रहते हैं। जबकि यह शब्द कहता है कि दलित पिछड़ों को स्थापित समाज के साथ समरस रहना चाहिए। मतलब उनके अनुसार बनी हुई सामाजिक व्यवस्था में।

दलित नेता रामदास अठावले यह जानते हैं। मोदी के साथ रहने के बावजूद उन्होंने पत्र लिखकर उनसे कहा था कि सरकारी कागजों में सामाजिक न्याय के बदले इस शब्द का इस्तेमाल किया जाने लगा है। इसे बंद होना चाहिए। जाहिर है कि उनकी इस बात को किसी को सुनना नहीं था। मगर संतोष की बात है कि कुछ दलित नेता संघ की इन बारीक कारगुजारियों को समझते हैं। कुछ कर नहीं पाएं वह अलग बात है। ज़्यादा जानें बॉलीवुड समाचार खेल उपकरण बजट 2019 युवा मनोरंजन विविध समाचार हिंदी समाचार ऐप सदस्यता राजनीति समाचार बॉलीवुड समाचार पत्रिका साक्षात्कार कौशल प्रशिक्षण समाचार सदस्यता तो दलित जिसे वे हिन्दुत्ववादी राजनीति में शामिल मानते हैं उसे वे देश के सर्वोच्च पद की लिए स्वीकार नहीं कर सकते तो मुस्लिम का नाम जिसके खिलाफ उनकी पूरी राजनीति है उसकी हिजाबी महिला का नाम आना तो उनकी ध्रुवीकरण की राजनीति के लिए और फायदेमंद ही है।

ओवैसी यह काम कर रहे हैं। कहा जा रहा था कि बीजेपी की हिन्दू–मुस्लिम राजनीति कमजोर पड़ गई है। तो उसे वापस मजबूत करने के लिए ओवैसी ने अपने इस बयान को फिर दोहरा दिया। इससे पहले वे कर्नाटक में इस विषय पर हुए विवाद के बाद यही बात कि हिजाबी लड़की एक दिन भारत की प्रधानमंत्री बनेगी कह चुके थे। ओवैसी मुस्लिम की राजनीति करते हैं। और इस के लिए वे सबसे बड़ा मुद्दा यह उठाते हैं कि मुस्लिम का नेता मुस्लिम ही हो सकता है। वे मुस्लिम कयादत की बात करते हैं। यह बात तो बीजेपी को बहुत सूट करती है। 15– 16 प्रतिशत मुस्लिम का नेता मुस्लिम तो बाकी हिन्दुओं का नेता हिन्दू। तो उनकी मुस्लिम कयादत की राजनीति में देश का बहुसं यक गैर मुस्लिम हिजाबी महिला प्रधानमंत्री को कैसे स्वीकार कर लेगा?

देश में जहां अभी केन्द्र सरकार में एक भी मुसलमान मंत्री तक नहीं है वहां हिजाबी महिला के प्रधानमंत्री पद तक पहुंच जाने की बात करना सिवाय जज्बात भड़काने के और क्या है? मुस्लिम महिला के सशक्तिकरण के बहुत सारे काम होना है। प्रधानमंत्री सिर्फ एक ही बनेगी लेकिन नौकरी पाकर बहुत बड़ी तादाद में महिलाएं मजबूत होंगी। महिला शिक्षा महिलाओं के आर्थिक रूप से स्वावलंबी होने पर ओवैसी कभी बात नहीं करते हैं।

बस बैरिस्टर साहब हिजाबी महिला के प्रधानमंत्री बनने की बात हर उस समय दोहरा देते हैं जब बीजेपी को सा प्रदायिक ध्रुवीकरण के लिए उसकी जरूरत होती है। यह बैरिस्टर विपक्षी को अपने क्लाइंट (मुस्लिम जिसके वे कायद,नेता होने का दावा करते हैं) पर और ज्यादा हमले करने का मौका मुहैया करवाते हैं। बंगाल में चुनाव हैं। बीजेपी को मुस्लिम वोट काटने की सबसे ज्यादा जरूरत है। इसके लिए सबसे ज्यादा उपयोगी ओवैसी ही हो सकते हैं। इस तरह के जज्बात भड़काकर वे मुस्लिम वोट काटते हैं और इसका फायदा बीजेपी को मिलता है।

अभी बिहार में सबसे देख लिया। ओवैसी ने बीजेपी के सा प्रादायिक ध्रुवीकरण का साथ देकर उसके अब तक के सर्वाधिक 89 विधायकों को चुनाव जितवा दिया और खुद भी सबसे ज्यादा 5 मुस्लिम विधायक जितवा लिए। लेकिन नुकसान क्या हुआ? 243 सीटों में से मुस्लिम विधायकों की सं या केवल 11 रह गई। जबकि पिछली बार 2020 में 19 थी। और 2015 में 24। ओवैसी की खुद की सीटें आ जाती हैं और बाकी धर्मनिरपेक्ष पार्टियों की सीटें भी कम हो जाती हैं और उनसे लड़ने वाले मुस्लिम प्रत्याशी भी हार जाते हैं। ज़्यादा जानें खेल उपकरण संपादकीय लेख युवा मनोरंजन साक्षात्कार संग्रह विविध समाचार बजट 2019 मनोरंजन पत्रिका प्रमुख समाचार हिंदी समाचार ऐप सदस्यता ई–पेपर सदस्यता बंगाल में इस बार बीजेपी हर दांव आजमा रही है। ममता बनर्जी के लिए हर फ्रंट पर मुश्किलें खड़ी कर रही है। ईडी की एंट्री करवा दी है। एसआईआर चल ही रहा है। और धार्मिक विभाजन के लिए वहां बाबरी मस्जिद बनवाने और हिजाबी महिला के प्रधानमंत्री बनने की जज्बाती राजनीति की शुरूआत करवा दी गई है। बिहार में तो केवल 18 प्रतिशत ही मुस्लिम वोट थे। बंगाल में इससे लगभग दो गुने हैं। वहां इस समय 44 मुस्लिम विधायक हैं। मगर इससे बहुत ज्यादा सं या में वहां मुस्लिम धर्मनिरपेक्ष दलों को जिनमें इस समय वहां टीएमसी ही प्रमुख है, चुनाव जितवाता है। हुमायूं कबीर जो वहां बाबरी मस्जिद के नाम पर राजनीति कर रहे हैं और ओवैसी जो अभी तो हिजाबी मुस्लिम महिला को प्रधानमंत्री बनाने की बात कर रहे हैं चुनाव आने तक कोई आश्चर्य नहीं करना कि वे बंगाल में हिजाबी मु यमंत्री की बात न करने लगें।

प्रधानमंत्री दूर की चीज है। बंगाल में महिला मु यमंत्री हैं तो यहां हिजाबी मु यमंत्री का नारा ज्यादा चलेगा! सावधान ममता को या दूसरे धर्मनिरपेक्ष दलों को नहीं रहना है। वे तो अपने सिद्धांतों पर रहेंगे होशियार मुस्लिम को रहना होगा। जिन्ना की इसी तरह की राजनीति ने उसे बहुत नुकसान पहुंचाया है। और जो पाकिस्तान जिन्ना ने बनाया वह पूरी तरह एक फेल्ड स्टेट (असफल राष्ट्र) में तबदील हो चुका है। तरक्की के मामले में वह भारत के मुकाबले कहीं नहीं है। भारत का मुसलमान हमेशा से धर्मनिरपेक्ष नेताओं को ही अपना नेता मानता रहा है। पहले नेहरू को माना फिर मुलायम, लालू, ममता बनर्जी जैसे क्षेत्रीय दलों के नेताओं के साथ भी गया। लेकिन अब ओवैसी नया शिगुफा लाए हैं। मुसलमानों को अपनी कयादत खड़ी करना होगी। 15–16 प्रतिशत आबादी अपनी कयादत खड़ी करके क्या करेगी? वही हाल होगा जो अभी बिहार में हुआ। न कयादत खड़ी होगी न दूसरे धर्मनिरपेक्ष दल जीत पाएंगे। न खुदा ही मिला न विसाले सनम वाली हालत हो जाएगी। बंगाल के साथ अभी असम और केरल में भी चुनाव हैं। वहां भी बंगाल की तरह मुस्लिम विधायकों की सं या अच्छी खासी है। दोनों जगह 32–32 विधायक हैं। इनके साथ तमिलनाडु में भी चुनाव हैं वहां 6 हैं। और पुडुचेरी में एक। हवा सब जगह एक साथ चलेगी। मीडिया इसे और बढ़ाएगा। रोकना केवल मुस्लिम के हाथ में है। जज्बातों में नहीं बहना। जो इशु बेरोजगारी, महंगाई, सरकारी शिक्षा, सरकारी चिकित्सा उसके हिन्दू भाइयों के हैं वही उसके भी। हिजाबी प्रधानमंत्री और हिजाबी मु यमंत्री कोई इशु नहीं हैं। यह जबर्दस्ती बनाया जा रहा इशु है। भावनाओं को भड़काने के लिए। ज़्यादा जानें संपादकीय लेख ताज़ा समाचार मु य शीर्षक ताज़ा खबरें अपडेट प्रादेशिक समाचार राजनीति समाचार हिंदी भाषा शिक्षण डिजिटल मार्केटिंग सेवाएँ बजट संबंधित वित्तीय सेवाएँ साक्षात्कार संग्रह मुस्लिम को बहुत सावधान रहने की जरूरत है। भाजपा की हिन्दू–मुस्लिम राजनीति को अब हिन्दू नकार रहा है। बहुत नुकसान उठा लिया उसने। सरकारी नौकरी खत्म हो गई। उसके बच्चे बेरोजगार घूम रहे हैं। इसलिए अब दांव मुस्लिम पर लगाया जा रहा है कि वह जज्बाती इशु को हवा देगा ताकि फिर हिन्दुओं को भी उसी लाइन पर वापस लाया जाए। सा प्रदायिक राजनीति खत्म होना हिन्दू मुसलमान दोनों के हित में है।

देश के लिए फायदेमंद है चाइल्ड केयर में निवेश करना

डॉ. पवित्र मोहन

एकीकृत बाल विकास योजना (आईसीडीएस) की पालना योजना के तहत परिकल्पित राज्य प्रायोजित डे–केयर सेंटर में बड़ी संभावनाएं हैं लेकिन वे वर्तमान में महत्वाकांक्षा न होने और कम बजटीय आवंटन से विवश होने से ग्रस्त हैं। मजबूत परिवारों को मजबूत सहायक संरचनाओं की आवश्यकता होगी। समाज और राज्य की जि मेदारी है कि वे इन्हें स मान के साथ प्रदान करें। फ़ैमिली गेम न्यूयार्क में मेयर का चुनाव जीतने वाले जोहरान ममदानी की जीत का एक बड़ा कारण शहर के सभी बच्चों के लिए राज्य प्रायोजित चाइल्ड केयर की गारंटी देना था। लोक कल्याण पर खर्च न करने की नीति रखने वाले, विशेष रूप से डोनाल्ड ट्र प के समय और अमेरिका में दूर–दक्षिणपंथ की नई और यहां तक कि अंधी दिशा में जा रहे देश में यह एक साहसिक वादा था। ममदानी की जीत इंगित करती है कि अमेरिकी मतदाता साहसिक विचारों के साथ काम करते हुए समग्र विकास को बढ़ावा देते हैं। भारत के संदर्भ में बच्चों के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए एक बड़ी चुनौती को देखते हुए इस विषय पर गंभीर चर्चा हो सकती है कि कैसे और क्यों बच्चों पर केंद्रित जमीनी स्तर के विकास का एजेंडा विभिन्न दलों के राजनीतिक एजेंडे में वरीयता प्राप्त कर सकता है।

बच्चों को हर जगह एक सुरक्षित, सहायक व पोषण करने वाले वातावरण की आवश्यकता होती है। आधुनिक दुनिया और इसकी अर्थव्यवस्था ने सामाजिक–आर्थिक स्तर पर बच्चों की देखभाल करने के लिए परिवारों की क्षमता को सीमित कर दिया है। छोटे परिवार के आकार, माता–पिता दोनों को घर से बाहर काम करने की आवश्यकता, लंबे समय तक काम के घंटे, लोगों को काम के लिए बाहर जाने की जरूरत; इन सभी मुद्दों ने अपने बच्चों की देखभाल करने की परिवारों की क्षमता को कम कर दिया है।

हालांकि अमीर परिवार निजी चाइल्ड केयर का खर्च उठा सकते हैं और उनके बच्चे घर पर या संस्थानों में बढ़ते रहते हैं, परन्तु गरीब परिवारों में बच्चे समुचित चाइल्ड केयर के बिना बढ़ते हैं जो अक्सर उनकी वृद्धि, विकास और भावनात्मक क्षमता को अत्यंत सीमित कर देते हैं। आमतौर पर किसी भी देखभाल करने वाले की अनुपस्थिति में उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य से भी समझौता किया जाता है। यह देखा गया है कि ग्रामीण भारत, विशेष रूप से ग्रामीण राजस्थान के कई हिस्सों में पुरुष श्रम–रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं जबकि महिलाएं और बच्चे अक्सर पीछे रह जाते हैं। महिलाएं जलाऊ लकड़ी इकट्ठा करने, पानी लाने, खेतों में काम करने और बुजुर्गों की देखभाल करने का काम करती हैं। उनके पास खुद की या अपने बच्चों की देखभाल करने के लिए समय नहीं होता। अधिकतर ऐसा होता है कि छोटे बच्चे खुद अपनी देखभाल करते हैं या उनका कोई बड़ा भाई–बहन उनकी देखभाल करता है जो अक्सर खुद ही एक छोटा बच्चा होता है। कभी–कभी दादा–दादी को बच्चों की देख–भाल करने का जि मा दिया जाता है पर ज्यादातर मामलों में वे स्वयं अपनी शारीरिक स्थितियों के कारण असमर्थ होते हैं। फलतः कई बार ऐसी स्थितियां बनती हैं कि कभी बच्चे कुओं में गिर जाते हैं या जानवरों द्वारा रौंद दिए जाते हैं अथवा अकेलेपन का शिकार हो कर निष्क्रिय पड़े रहते हैं।

राजस्थान की कई बस्तियों में जहां डे–केयर सेंटर चलाये हैं, उनमें देखा गया है कि ऐसे केंद्रों में रखे गए अधिकांश बच्चे अच्छी तरह से विकसित होते हैं और स्कूलों में उन बच्चों की तुलना में बहुत बेहतर प्रदर्शन करते हैं जिन्हें खुद के हाल पर छोड़ दिया जाता है। उनकी माताओं ने यह भी बताया कि जब वे काम के लिए जाती हैं तो अपने बच्चों की भलाई के बारे में उन्हें बहुत कम चिंता रहती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे खुद के आराम के लिए कुछ समय भी निकाल लेती हैं। शहरी अहमदाबाद में कई प्रवासी परिवार निर्माण स्थलों पर काम करते हैं जहां बच्चों को अक्सर इधर–उधर भटकने के लिए छोड़ दिया जाता है जिससे उन्हें चोट लगने, उनके उपेक्षित रह जाने और कुपोषण का बहुत खतरा होता है। इन स्थलों पर गैर–सरकारी संगठनों और नियोक्ताओं द्वारा प्रबंधित डे–केयर सेंटर इन परिवारों के बच्चों को सुरक्षा, शिक्षा और पोषण प्रदान करते हैं।

इन स्थितियों में बाल देख–भाल सीमित परिस्थितियों में की जाती है जो सरकार की मदद के बिना संचालित होती है और वह एक अधिकार नहीं होता। यह देखते हुए कि विकास के लिए बच्चों के प्रारंभिक वर्ष मूलभूत हैं और परिणामों को आजीवन आकार देते हैं, न्यूनतम निवेश से होने वाले भारी लाभों को देखते हुए और अधिक क्षेत्रों तथा राज्यों में बाल देख–भाल मॉडल का विस्तार करने की आवश्यकता है। इस बारे में किए गये कई अध्ययन इसका समर्थन करते हैं। जर्नल ऑफ ग्लोबल हेल्थ की एक रिपोर्ट के अनुसार नि न और मध्यम आय वाले देशों में 0–3 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए केंद्र–आधारित चाइल्ड केयर पर अध्ययनों की एक प्रणालीगत समीक्षा बच्चों के विकास, पोषण और विकास मेट्रिक्स में सकारात्मक परिणामों से जुड़ी है। 2011 की एक लैंसेट समीक्षा में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि चूंकि बच्चों का विकास हो रहा होता है तो बढ़ते केंद्र–आधारित प्रारंभिक शिक्षण कार्यक्रम बच्चों के संज्ञानात्मक विकास, स्कूल की तैयारी में सुधार करते हैं और मजबूत शैक्षणिक प्रदर्शन का समर्थन करते हैं। हाशिए में रहने वाले बच्चों के लिए ये लाभ अधिक गहन होते हैं। वैश्विक साक्ष्य से पता चलता है कि संज्ञानात्मक कामकाज और सामाजिक–भावनात्मक कौशल का निर्माण बेहतर शिक्षा, रोजगार तथा वयस्क होने पर कमाई में बदल जाता है। यह गरीबी के अंतर–पीढ़ीगत चक्र को तोड़ने में मददगार होता है। जमैका से एक ऐतिहासिक अध्ययन (गर्टलर, पॉल, एट अल %लेबर मार्केट रिटर्न्स टू एन अर्ली चाईल्डहुड स्टिमुलेशन इंटरवेन्शन इन जमैका%, साईंस– 2014) ने पाया कि जिन बच्चों को पोषण और प्रारंभिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ, उन्होंने 20 साल बाद उन लोगों की तुलना में 25 प्रतिशत अधिक आय अर्जित की जिन्हें ऐसे अवसर और सुविधाएं नहीं मिली थीं। इसके अलावा, यह दिखाने के लिए अकाट्य सबूत हैं कि कम और मध्यम आय वाले देशों में भी बड़ी सं या में माताओं को काम करने में सक्षम बनाने में चाइल्ड केयर की उपलब्धता किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जैसे–जैसे अधिक सं या में माताएं कार्यबल में शामिल होती हैं, समग्र रोजगार दर बढ़ती है। इकानॉमिस्ट इ पैक्ट के चाइल्ड केयर डिविडेंड इनिशिएटिव (%ब्रिजिंग द एक्सेस गैप% क्रांटिफाइंग द इकोनॉमिक रिटर्न ऑफ पब्लिक इन्वेस्टमेंट इन चाइल्ड केयर%) द्वारा किए शोध का अनुमान है कि चाइल्ड केयर सेवाओं तक पहुंच गुणक प्रभाव के माध्यम से हर साल राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 1 फीसदी तक की वृद्धि हो सकती है। यह महत्वपूर्ण है कि नि न और मध्यम आय वाले देशों में कार्यबल में माताओं की कम भागीदारी की बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। महिलाओं के लिए यह कीमत व्यक्तिगत और वित्तीय दोनों हैं। यह न केवल कैरियर के विकास को धीमा और कमाई को कम करता है बल्कि उनकी स्वतंत्रता तथा काम देने वाली एजेंसी की क्षमता को भी कम करता है। कम मातृ श्रम शक्ति भागीदारी दर के कारण घरेलू आय नकारात्मक रूप से प्रभावित होती है जिससे राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक विकास कम होता है। द इकानॉमिस्ट की रिपोर्ट से यह भी पता चलता है कि अपर्याप्त चाइल्ड केयर कितना महंगा हो सकता है– नाइजीरिया में लगभग पांच में से एक बच्चा स्कूल जाने की उम्र से कम का है और अधिकांश छोटे बच्चों की देखभाल घर पर की जाती है। वहां 2022 में महिलाओं की काम करने की सीमित क्षमता के कारण देश के सकल घरेलू उत्पाद का 1.09 प्रतिशत आय का नुकसान हुआ। चाइल्ड केयर उद्योग में सृजित नौकरियों के कारण आर्थिक लाभ भी उत्पन्न होते हैं।

विविध समाचार

5100 नवजन्मी बेटियों की लोहड़ी : बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का सशक्त संदेश : डॉ. बलजीत कौर

चंडीगढ़ / जालंधर १८/०२ (संवाददाता):बेटी बचाओदृबेटी पढ़ाओ के उद्देश्य को और सुदृढ़ करते हुए गांव घुड़का के जोहल फार्म में 5100 नवजन्मी बेटियों के सम्मान में लोहड़ी का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में पंजाब के मुख्यमंत्री स भगवंत सिंह मान की पत्नी डॉ. गुरप्रीत कौर, पंजाब राज्य महिला आयोग की चेयरपर्सन श्रीमती राज लाली गिल, तथा पंजाब एग्री फूड कॉरपोरेशन लिमिटेड के चेयरमैन मंगल सिंह बस्सी विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभी ने बेटी बचाओदृबेटी पढ़ाओ के संदेश को समाज तक और अधिक मजबूती से पहुंचाया। इस अवसर पर पंजाब सरकार की सामाजिक सुरक्षा, महिला एवं बाल विकास मंत्री डॉ. बलजीत कौर ने विशेष रूप से शिरकत करते हुए कहा कि 5100 नवजन्मी बेटियों की लोहड़ी मनाना समाज में बेटियों के प्रति बदलती सकारात्मक सोच का स्पष्ट प्रतीक है। उन्होंने नवजन्मी बेटियों के माता–पिता को लोहड़ी पर्व की बधाई दी और उन्हें सम्मानित भी किया। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि बेटी के जन्म को उत्सव के रूप में मनाना बदलती सामाजिक सोच की वास्तविक पहचान है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के नेतृत्व में पंजाब सरकार बच्चियों की सुरक्षा, शिक्षा और सशक्तिकरण सुनिश्चित करने के लिए कई जनहितकारी योजनाएं लागू कर रही है, ताकि हर बेटी को सम्मान, समानता और आगे बढ़ने के समान अवसर मिल सकें। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि सरकारी प्रयासों के साथ–साथ सामाजिक संस्थाओं और गांव स्तर पर लोगों की सक्रिय भागीदारी ही बेटी बचाओ अभियान को सफल बना सकती है। इस प्रकार के सामूहिक आयोजन नई पीढ़ी में समानता, सम्मान और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को मजबूत करते हैं। कैबिनेट मंत्री डॉ. बलजीत कौर ने इस पहल के लिए जोहल फार्म सेवा सोसायटी और कार्यक्रम से जुड़े अन्य सहयोगियों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे सामाजिक प्रयास बेटियों के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अमृतसर में सरपंच हत्याकांड में शामिल 2 शूटर छत्तीसगढ़ से गिरफ्तार, 5 मददगार भी पकड़े, गैंगस्टर दासुवाल से थी रंजिश

चंडीगढ़। पंजाब के अमृतसर में आम आदमी पार्टी से जुड़े सरपंच जरमल सिंह की हत्या के मामले में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। इस मामले को लेकर सोमवार को पंजाब के डीजीपी गौरव यादव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर अहम जानकारी साझा की। डीजीपी के अनुसार, सरपंच हत्याकांड में अब तक कुल 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इनमें 2 की गिरफ्तारी छत्तीसगढ़ के रायपुर से, 2 मोहाली से और 3 तरनतारन से की गई है। डीजीपी ने बताया कि रायपुर से पकड़े गए सुखराज सिंह निवासी तरनतारन और कर्मजीत सिंह निवासी गुरदासपुर ने ही सरपंच पर गोलियां चलाई थीं। इसके अलावा जोबनजीत सिंह समेत दो आरोपियों को भी हिरासत में लिया गया है वहीं आज सुबह पुलिस ने कुलविंदर सिंह किंदा, अरमानदीप सिंह और हरदीप सिंह को भी गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि रायपुर से गिरफ्तार दोनों आरोपियों को वहां की स्थानीय अदालत में पेश कर 14 दिन के ट्रांजिट रिमांड पर लिया गया है। इसके बाद उन्हें हवाई मार्ग से पंजाब लाया जा रहा है। डीजीपी ने यह भी खुलासा किया कि इस हत्या की साजिश विदेश में बैठे एक हैंडलर ने रची थी। सरपंच जरमल सिंह की गैंगस्टर प्रभ दासुवाल के साथ पुरानी रंजिश बताई जा रही है। डीजीपी गौरव यादव ने सख्त संदेश देते हुए कहा कि यदि कोई पंजाब में कानून व्यवस्था को चुनौती देने की कोशिश करेगा, तो पंजाब पुलिस उसे देश या विदेश कहीं भी छोड़ेगी नहीं। उल्लेखनीय है कि तरनतारन क्षेत्र के रहने वाले सरपंच जरमल सिंह की 4 जनवरी को उस समय गोली मारकर हत्या कर दी गई थी, जब वह अमृतसर में एक शादी समारोह में शामिल होने आए थे। वारदात के बाद दोनों शूटर छत्तीसगढ़ फरार हो गए थे और रायपुर में अपने रिश्तेदारों के यहां छिपे हुए थे। रविवार को रायपुर और पंजाब पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में दोनों शूटरों को गिरफ्तार कर लिया गया था।

पंजाब में सीएम चेहरा नहीं बनाएगी कांग्रेस, इंचार्ज बघेल बोले सबसे बड़ा चेहरा होगा सिर्फ राहुल गांधी

बठिंडा। 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस में सीएम फेस बनने की रेस शुरू होने से पहले ही रुक गई है। कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी व छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने साफ कर दिया है कि कांग्रेस का कोई भी सीएम चेहरा नहीं होगा। बठिंडा पहुंचे भूपेश बघेल ने कहा कि कांग्रेस में चेहरा सिर्फ राहुल गांधी का ही होगा। कांग्रेस सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ेगी। भूपेश बघेल ने कहा कांग्रेस के जितने भी नेता हैं, सब चेहरा हैं लेकिन सबसे बड़ा चेहरा राहुल गांधी हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी एक बार कैप्टन अमरिंदर सिंह को चेहरा बनाकर चुनाव लड़ा था। उसके पहले सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ा जाता है। अभी भी हम सामूहिक नेतृत्व में चुनाव लड़ेंगे। दरअसल, विधानसभा चुनावों को लेकर कांग्रेस के कई बड़े नेता खुद को सीएम फेस समझने लगे थे। लेकिन कांग्रेस इंचार्ज के इस बयान के बाद पार्टी के दिग्गज नेताओं को झटका लगा है। हालांकि राजा वड़िंग और रंधावा पहले ही सीएम चेहरे का दावा छोड़ चुके हैं। बघेल का सीधे तौर पर कांग्रेस का सीएम चेहरा घोषित न करने की बात कहना 2022 के चुनाव से सबक लेना है। तब चन्नी और नवजोत सिद्धू की लड़ाई से कांग्रेस 18 सीटों पर सिमट गई। इस बार हाईकमान नहीं चाहता कि सीएम कुर्सी को लेकर झगड़ा शुरू हो। पंजाब कांग्रेस में पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी इन दिनों बिना किसी विवाद या खुली बयानबाजी के मुख्यमंत्री चेहरे की अपनी दावेदारी को मजबूत करने में जुटे हैं। वर्ष 2021 में कैप्टन अमरिंदर सिंह को पद से हटाए जाने के बाद चन्नी को प्रदेश की कमान सौंपी गई थी। हालांकि उन्हें मात्र तीन महीने का कार्यकाल मिला, लेकिन उस दौरान लिए गए उनके फैसले कांग्रेस को लगातार सुर्खियों में ले आए थे। राजनीतिक विशेषज्ञों के अनुसार, मौजूदा हालात में पंजाब में आम आदमी पार्टी के सामने कांग्रेस ही मुख्य मुकाबले में नजर आती है। हालांकि शिरोमणि अकाली दल ने तरनतारन उपचुनाव और जिला परिषददृब्लॉक समिति चुनावों में बेहतर प्रदर्शन किया है, लेकिन फिलहाल वह कांग्रेस के बराबर की स्थिति में नहीं दिखता। भाजपा की बात करें तो उसका वोट शेयर भले ही बढ़ रहा हो, लेकिन ग्रामीण इलाकों में उसकी पकड़ अभी कमजोर बनी हुई है। ऐसे में कांग्रेस हाईकमान के लिए पंजाब एक बड़ा अवसर माना जा रहा है, क्योंकि यह उन राज्यों में शामिल है जहां भाजपा की राजनीतिक मौजूदगी सीमित है।

पंजाब सीएम सेहत बीमा योजना की लांचिंग टली, स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कारण

चंडीगढ़। पंजाब सरकार की बहुप्रतीक्षित मुख्यमंत्री सेहत बीमा योजना, जो पहले 15 जनवरी को लॉन्च होनी थी, जो अब 22 जनवरी को लॉन्च की जाएगी। योजना के लॉन्च में यह एक सप्ताह की देरी जत्थेदार साहिब द्वारा मुख्यमंत्री को समन किए जाने के कारण हुई है। यह जानकारी पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. बलबीर सिंह ने फतेहगढ़ साहिब में दी।

वह यहां योजना की तैयारियों का जायजा लेने पहुंचे थे। स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि योजना के औपचारिक शुभारंभ से पहले इसका ट्रायल रन किया जाएगा, ताकि किसी भी तकनीकी या प्रशासनिक खामी को दूर किया जा सके। डॉ. बलबीर सिंह ने कहा कि सरकार ने इस योजना के लिए 1200 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया है। योजना का लक्ष्य करीब 3 करोड़ लोगों को कवर करना है।

सरकार की कोशिश है कि हर पात्र नागरिक को सेहत बीमा कार्ड उपलब्ध कराया जाए। इसके लिए दो क्राइटेरिया है। एक तो आधार कार्ड पंजाब का होना चाहिए और वोटर कार्ड पंजाब का होना चाहिए। जो बच्चे है, उनका डिपेंटेंड कार्ड होना चाहिए।

डॉ. बलबीर सिंह ने कहा कि हमें कई अन्य सोर्स से भी पैसे आने है। सरकार 1200 से 1500 करोड़ खर्च करेगी तो इससे लोगों का फायदा होगा। इससे लोगों को इमरजेंसी केयर मिलेगी। सेहत मंत्री ने कहा कि यह योजना बहुत अच्छी है। जैसे फ्री बिजली की योजना दिल्ली में केजरीवाल सरकार ने शुरू की। इसे आगे पंजाब में सीएम भगवंत मान ने बढ़ाया।

आतिशी के फर्जी वीडियो में गुरुओं का नाम जोड़ कर भाजपा ने की बेअदबी : भगवंत सिंह मान

बठिंडा। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी के दिल्ली विधानसभा के वीडियो से छेड़छाड़ करने के लिए भाजपा की कड़ी निंदा की और इसे पंजाब में सांप्रदायिक हिंसा भड़काने की नीच साजिश करार दिया। धर्मनिरपेक्ष पंजाब सरकार ऐसे मंसूबों को सफल नहीं होने देगी, यह कहते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि वीडियो को एडिट करके इसमें जानबूझकर गलत शब्दावली शामिल की गई है, जो सिख धर्म की घोर बेअदबी है। साथ ही उन्होंने बताया कि फॉरेंसिक जांच रिपोर्ट ने यह साबित कर दिया है कि आतिशी ने अपने बयान में कहीं भी "गुरु" शब्द नहीं बोला। भाजपा नेता कपिल मिश्रा के खिलाफ पंजाब पुलिस की कार्रवाई को जायज बताते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि यह झूठी वीडियो क्लिप विधानसभा के आधिकारिक रिकॉर्ड में कहीं नहीं है और भाजपा चंडीगढ़, बीबीएमबी तथा पंजाब यूनिवर्सिटी जैसे मुद्दों पर पंजाब विरोधी मानसिकता से चल रही है। उन्होंने कहा कि ऐसे में विपक्षी दलों के नेता नीच राजनीति करते हुए राज्य सरकार के खिलाफ कोई ठोस मुद्दा न होने के कारण इस झूठ का बचाव करने के लिए बेचैन हो रहे हैं। बठिंडा में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि शुरू से ही भाजपा ने फिर्कापरस्ती, बंटवारा और नफरत की राजनीति की है और इसी के हिस्से के रूप में विधानसभा चुनाव नजदीक आने के मद्देनजर भाजपा ने पंजाब में लोगों को सांप्रदायिक लकीरों पर बांटने के लिए इस एजेंडे को लागू करना शुरू कर दिया है। भाजपा ने दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री के वीडियो से छेड़छाड़ करके इसमें आपत्तिजनक शब्दावली शामिल की है। यहां तक कि फॉरेंसिक जांच में भी स्पष्ट रूप से साबित हो गया है कि 'आप' नेता ने कहीं 'गुरु' शब्द बोला ही नहीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि अपने संकीर्ण राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए तथ्यों को गलत तरीके से पेश करना भगवा पार्टी की पुरानी रणनीति है और इस कार्रवाई ने सिख संगत की भावनाओं को गहरी ठेस पहुंचाई है क्योंकि वीडियो से छेड़छाड़ करके उन्होंने सिखों की बेअदबी की है, जो बिल्कुल भी बर्दाश्त योग्य नहीं है। उन्होंने कहा कि इस नीच हरकत करने वालों को उनके पापों की सजा जरूर मिलेगी। उन्होंने कहा कि वीडियो से छेड़छाड़ के बारे में पूरी स्पष्टता हो गई है क्योंकि दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा सदन की कार्यवाही में यह शब्द कहीं भी बोले नहीं दिखाई देते। भाजपा नेता कपिल मिश्रा का हवाला देते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि जिस नेता ने सोशल मीडिया पर यह एडिटेड (छेड़छाड़ वाला) वीडियो अपलोड किया था, उसे अपने कुकर्मों के नतीजे भुगतने पड़ेंगे और पंजाब पुलिस ने उसके खिलाफ सही केस दर्ज किया है। यहां दिल्ली विधानसभा के विशेषाधिकार का कोई मामला नहीं है। कपिल मिश्रा पर आम लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का केस दर्ज किया गया है और उसके खिलाफ कानून के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। चंडीगढ़, बीबीएमबी, पंजाब यूनिवर्सिटी, गणतंत्र दिवस की झांकियों और अन्य मामलों पर भाजपा के पंजाब विरोधी रुख के बारे में बात करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि पंजाब के प्रति भगवा पार्टी का रवैया हमेशा दुश्मनी वाला रहा है। उन्होंने आगे कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह, राज्य भाजपा अध्यक्ष सुनील जाखड़ और केंद्रीय राज्य मंत्री रवनीत सिंह बिट्टू आज एक अजीबोगरीब स्थिति में घिर गए हैं क्योंकि वे बार–बार झूठ का सहारा लेकर पंजाब के प्रति भाजपा के रवैये को जायज ठहराने के लिए मजबूर हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि भाजपा और उसकी लीडरशिप में महान सिख गुरु साहिबान के प्रति सम्मान की भावना कहीं नजर नहीं आती और प्रधानमंत्री को तो कभी श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस (शहीदी वर्षगांठ) की याद में आयोजित कार्यक्रमों में शामिल होने का न्योता स्वीकार करने का समय भी नहीं था। हर कोई जानता है कि न तो प्रधानमंत्री और न ही भाजपा का कोई वरिष्ठ नेता या केंद्रीय मंत्री इन कार्यक्रमों में नतमस्तक होने के लिए पंजाब आया। यह सिखों और हमारे महान गुरु साहिबान के प्रति एक तंग और घटिया मानसिकता को दर्शाता है। मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि कांग्रेस, अकाली दल और भाजपा पंजाब और इसकी सरकार के खिलाफ एक ही पटरी पर चल रहे हैं। ये पार्टियां एक ही दिन अलग–अलग समय पर एक जैसे प्रेस नोट भी जारी करती हैं, जिनका एकमात्र उद्देश्य राज्य सरकार के खिलाफ जहर फैलाना है। अकाली दल के नेता सुखबीर सिंह बादल पर निशाना साधते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि सुखबीर बादल पंजाब के मुद्दों पर मगरमच्छ के आंसू बहा रहे हैं, लेकिन ये वही नेता हैं जिन्होंने पंजाब यूनिवर्सिटी को केंद्रीय यूनिवर्सिटी का दर्जा देने के लिए सहमति दी थी और जिन्होंने काले कृषि कानूनों के लिए मोदी की प्रशंसा भी की थी। उन्होंने कहा कि ये पार्टियां पहले नशा तस्करों और गैंगस्टरों को संरक्षण भी देती रहीं हैं। उन्होंने आगे कहा कि आज भी वे गैंगस्टरों को टिकटें दे रहे हैं। पूर्व कांग्रेसी मंत्री सुखजिंदर सिंह रंधावा पर वार करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि रंधावा को याद रखना चाहिए कि उनके पिता ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को ऑपरेशन ब्लू स्टार के लिए बधाई दी थी। गुरदासपुर से वर्तमान लोकसभा सदस्य उसी कांग्रेस पार्टी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जिसने सिखों के सबसे पवित्र धार्मिक स्थानों में से एक पर ऑपरेशन ब्लू स्टार किया था। मुख्यमंत्री ने कहा कि पंजाब सरकार के खिलाफ कोई ठोस मुद्दा न होने के कारण विपक्षी दलों के नेता अपना मानसिक संतुलन खो चुके हैं। उन्होंने कहा कि इस सबके बावजूद भी मेरी सरकार समाज के हर वर्ग की भलाई के लिए पूरी तरह वचनबद्ध है और सर्वपक्षीय विकास सुनिश्चित करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है। शिक्षा क्षेत्र में प्राप्तियों को उजागर करते हुए मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने कहा कि सरकारी स्कूलों को स्कूल ऑफ एमिनेंस स्कूलों में अपग्रेड किया जा रहा है और राज्य सरकार के निरंतर प्रयासों के कारण पंजाब ने केंद्र सरकार द्वारा करवाए गए राष्ट्रीय मूल्यांकन सर्वेक्षण में पहली बार केरल को पछाड़ते हुए देश भर में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। सरकारी स्कूलों के 848 विद्यार्थियों ने नीट परीक्षा, 265 ने जेईई और 45 ने जेईई एडवांस्ड परीक्षा पास की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रिंसिपलों और शिक्षकों को पेशेवर प्रशिक्षण के लिए सिंगापुर, फिनलैंड और अहमदाबाद भेजा जा रहा है।

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार | राउरकेला, गुरूवार 19 फरवरी 2026 | पृष्ठ-6

राउरकेला में 500 किलोग्राम से ज़्यादा गांजा ज़ब्त, 6 लोग गिरफ़्तार

राउरकेला १८/०२ (संवाददाता): इंटरस्टेट ड्रग ट्रैफिकिंग के खिलाफ एक बड़ी कामयाबी हासिल करते हुए, राउरकेला पुलिस ने मंगलवार को प्लांटसाइट पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र में बोंडामुंडा रोड पर छह लोगों को गिरफ़्तार किया और 500 द्यद्द से ज़्यादा गांजा ज़ब्त किया।

गिरफ़्तार किए गए लोगों की पहचान गुनानिधि घुसी (36), सुखंत ओराम (37), राहुल कुमार साहू (25), निखिल रे (23), कौशिक कुमार पाधी (31), और नीरज सोनकर (24) के तौर पर हुई है। पुलिस ने बताया कि नीरज सोनकर और निखिल रे का पहले का क्रिमिनल रिकॉर्ड रहा है। NDPS एक्ट के सेक्शन 20(b)(ii)(C)/25 (केस नंबर 139) के तहत केस दर्ज किया गया है, और स्मगलिंग नेटवर्क का पता लगाने के लिए आगे की जांच चल रही है।

पुलिस के मुताबिक, यह ऑपरेशन 16-17 फरवरी, 2026 की दरमियानी रात को किया गया था, जब उन्हें एक बड़ी ड्रग खेप के बारे में पक्की खुफिया जानकारी मिली थी। SI एस. प्रधान की टीम ने बंडामुंडा रोड के पास पांच गाड़ियों को रोका। जांच में पता चला कि आरोपी कंधमाल-बौध इलाके से झारखंड और छत्तीसगढ़ के लिए गांजा ले जा रहे थे। रेड के दौरान, पुलिस को 502 kg 400 g गैर-कानूनी गांजा, पांच गाड़ियां, आठ मोबाइल फोन और 2,300 रुपये कैश मिले। पुलिस ने कन्फर्म किया है कि और साथियों की पहचान करने और ट्रैफिकिंग नेटवर्क को खत्म करने के लिए जांच जारी है।

कृषि व पशुपालन को बढ़ावा, 1,000 गाय दान योजना से किसानों को लाभ

संबलपुर १८/०२ (संवाददाता): धर्मेंद्र प्रधान ने संबलपुर दौरे के दौरान जिले को कृषि प्रधान क्षेत्र बताते हुए कहा कि यहां कृषि उत्पादन बढ़ाने, पशुपालन को प्रोत्साहन देने और मत्स्य पालन के विस्तार के लिए कई कार्यक्रम लागू किए गए हैं।

उन्होंने भरोसा जताया कि इन पहलों से स्थानीय किसानों की आय और आजीविका में सकारात्मक बदलाव आएगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि जिले में दुग्ध उत्पादन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 1,000 गाय दान करने की योजना बनाई गई है। इस पहल से न केवल दूध उत्पादन में वृद्धि होगी, बल्कि किसानों को सीधे आर्थिक लाभ भी मिलेगा। उन्होंने बताया कि दुग्ध व्यवसाय ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, क्योंकि इससे नियमित आय के अवसर पैदा होते हैं। प्रधान ने पशुपालन और मत्स्य पालन को कृषि के पूरक क्षेत्र बताते हुए कहा कि सरकार का फोकस किसानों को बहुआयामी आजीविका के अवसर उपलब्ध कराना है। आधुनिक तकनीकों, बेहतर नस्लों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से उत्पादकता बढ़ाने पर जोर दिया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि स्थानीय स्तर पर बुनियादी ढांचे और बाजार सुविधाओं को सुदृढ़ करने के प्रयास जारी हैं, ताकि किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिल सके। केंद्रीय मंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि इन योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन से जिले के किसान प्रगति की नई राह पर आगे बढ़ेंगे। उन्होंने किसानों से सरकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ उठाने और नई तकनीकों को अपनाने की अपील की।

एलटीआर टीचर उमीदवारों का मेरिट लिस्ट में देरी को लेकर विरोध प्रदर्शन

भुवनेश्वर १८/०२ (संवाददाता):लीव ट्रेनिंग रिज़र्व टीचर (एलटीआर)पोस्ट के लिए कैंडिडेट हाई स्कूल टीचर भर्ती के लिए मेरिट लिस्ट तुरंत जारी करने की मांग को लेकर भुवनेश्वर में ओडिशा स्टाफ सिलेक्शन कमीशन ऑफिस के बाहर अपना प्रोटेस्ट जारी रखे हुए हैं। लगातार आठवें दिन भी यह धरना-प्रदर्शन जारी रहा। एलटीआर भर्ती प्रोसेस 2023 में शुरू हुआ था, जिसमें आर्ट्स, ओडिया, हिंदी और संस्कृत सब्जेक्ट्स में लगभग 6,025 टीचिंग पोस्ट्स की घोषणा की गई थी। रिजल्ट्स की घोषणा के बाद, 22 जनवरी, 2026 से सर्टिफिकेट वेरिफिकेशन पूरा हुआ। हालांकि, वेरिफिकेशन प्रोसेस खत्म होने के बावजूद, OSSC ने अभी तक ऑफिशियल मेरिट लिस्ट पब्लिश नहीं की है, जिससे कैंडिडेट में निराशा बढ़ रही है। सैकड़ों कैंडिडेट ने अपना आंदोलन तेज कर दिया है, खबर है कि एक हजार से ज़्यादा कैंडिडेट प्रोटेस्ट में शामिल हो गए हैं। प्रदर्शनकारी रात भर OSSC ऑफिस के बाहर अपना धरना जारी रखे हुए थे। एक प्रोटेस्टर ने कहा, हम एक डेलीगेशन से मिले और हमें बताया गया कि मेरिट लिस्ट जल्द ही जारी की जाएगी। हमारा प्रोटेस्ट शुरू हुए आठ दिन हो गए हैं, फिर भी वेबसाइट या किसी ऑफिशियल नोटिफिकेशन के ज़रिए कोई अपडेट नहीं आया है। एक और कैंडिडेट ने कहा, जब तक कोई ऑफिशियल स्टेटमेंट जारी नहीं होता, हम अपना प्रोटेस्ट जारी रखेंगे। हम अपनी चिंताओं को दूर करने के लिए जब तक ज़रूरी होगा, तब तक यहीं रहने के लिए कमिटेड हैं। यह प्रदर्शन ओडिशा में पब्लिक रिक्रूटमेंट प्रोसेस में ट्रांसपेरेंसी और समय पर कम्युनिकेशन की बढ़ती मांग को दिखाता है।

पुलिस ने टांगी में जुए के अड्डे पर छापा मारकर 20 लोगों को गिरफ़्तार किया

खोरधा १८/०२ (संवाददाता):खोरधा ज़िले में टांगी पुलिस की सीमा के अंदर कुहुडी के पास एक बड़े जुए के अड्डे पर पुलिस ने रेड मारी, जिसमें कम से कम 20 लोग गिरफ़्तार हुए। यह ऑपरेशन इसलिए खराब हुआ क्योंकि आरोप है कि कुछ जुआरियों ने पुलिस टीम को डराने और रोकने के लिए फ़्लैंक फायरिंग की। रिपोर्ट्स के मुताबिक, टांगी द्धद्धष्ट रवींद्र भुजबल की लीडरशिप में एक टीम ने कुंजोरी काजू जंगल और पहाड़ी इलाके में बड़े पैमाने पर जुए के अड्डे के बारे में पक्की जानकारी मिलने के बाद अचानक रेड मारी। रेड के दौरान, कुछ जुआरियों ने कथित तौर पर भागने की कोशिश की और पुलिस वालों को डराने के लिए फ़्लैंक फायरिंग की।

हालांकि, पुलिस ने ऑफिशियली कन्फर्म नहीं किया है कि फ़्लैंक फायरिंग सच में हुई थी या नहीं। 20 लोगों को गिरफ़्तार किया गया, जबकि कई दूसरे भागने में कामयाब रहे। मौके से 10,38,500 कैश, एक लग्ज़री थार गाड़ी, 36 मोबाइल फोन और चार मोटरसाइकिलें ज़ब्त की गई हैं। पुलिस ने पॉलिटिकल लिंक से इनकार किया ऐसे बिना वेरिफिकेशन वाले दावे हैं कि गंजम जिले के एक विधायक का करीबी सहयोगी भागने वालों में शामिल था। हालांकि, टांगी द्धद्धष्ट रवींद्र भुजबल ने इस आरोप को गलत बताया है। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि रेड के दौरान भागने वालों का पता लगाने और उन्हें पकड़ने की कोशिशें चल रही हैं।

भारतीय सेना

www.joinindianarmy.nic.in

अग्निपथ योजना के अंतर्गत सेना में अग्निवीरों की भर्ती संबंधी सूचना

(वर्ष 27 की भर्ती के लिए पंजीकरण 14 फरवरी 2026 से 01 अप्रैल2026 तक शुरु हुआ)

मुख्य अंश

(नीचे दी कई जानकारी केवल सामान्य जानकारी के लिए है और कानूनी रुप से मान्य नहीं है।)

प्रवेश के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए www.joinindianarmy.nic.in पर प्रकाशित अधिसूचना देखें।)

वर्ग	विवरण	विस्तृत अधिसूचना पैराग्राफ नं.
प्रवेश का प्रकार	1. अग्निवीर जनरल ड्यूटी 2. अग्निवीर टेक्निकल 3. अग्निवीर क्लर्क/स्टोर कीपर टेक्निकल 4. अग्निवीर ट्रेड्समैन (कक्षा 10वीं उत्तीर्ण और 8वीं उत्तीर्ण) नोट: अग्निवीर कार्यक्रम के उम्मीदवार अपनी पात्रता के आधार पर उपर दी गई किन्ही दो श्रेणियों के लिए आवेद कर सकते हैं।	पैरा-1
आयु	17 1/2-22 वर्ष (न्यूनतम और अधिकतम आयु की गणना भर्ती वर्ष यानी 2027 की क्रमश: 01 जनवरी और 01 जुलाई को की जाएगी) केवल महिलाओं के लिए, सेवा के दौरान शहीद हुए रक्षा कर्मियों की विधवाओं के मामले में उपरी आयु सीमा में 30 वर्ष की आयु क (प्रशिक्षण में शामिल होने की तिथि के अनुसार) छूट दी जा सकती है।	पैरा-1
शैक्षणिक योग्यता	उम्मीदवार को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त स्कूल शिक्षा बोर्ड से उत्तीर्ण होना चाहिए, जैसा कि वेबसाइट www.joinindianarmy.nic.in पर उपलब्ध बोर्ड की सूची में दिया गया है।	
भौतिक मापन मानक (पीएमटी: उंचाई, वजन और छाती का फैलाव)	क्षेत्र और विशेष छूट के अनुसार	पैरा-5
शारीरिक फिटनेस परीक्षण (पीएफटी)	चयन के लिए शारीरिक फिटनेस टेस्ट (पीएफटी) में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है:- **पुरुषों के लिए**: 1.6 किमी दौड़, बीम (पुल अप्स) और 9 फीट की खाई और जिगजैग संतुलन में क्वालीफाई करना आवश्यक है। **महिलाओं के लिए**: 1.6 किमी दौड़, बीम (पुल अप्स) और 7 फीट की खाई और जिगजैग संतुलन में क्वालीफाई करना आवश्यक है। **नोट**: अग्निवीर टेक्निकल और अग्निवीर क्लर्क/स्टोर कीपर टेक्निकल पदों के लिए उपस्थित होने वाले उम्मीदवारों को सभी शारीरिक परीक्षणों में उत्तीर्ण होना आवश्यक है।	पैरा-24
वैवाहिक स्थिति	**पुरुष**: केवल अविवाहित।	पैरा-18
	महिला: अविवाहित, विधवा, तलाकशुदा या कानूनी तौर पर अलग रह रही महिलाएं जिनके बच्चे नहीं है, बशर्ते वे अन्य सभी पात्रता मानदंडों को पूरा करती हों।	पैरा-18 एवं पैरा 1
भर्ती प्रक्रिया	ऑनलाइन पंजीकरण/आवेदन > ऑनलाइन सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईई) > भर्ती रैली (पीएफटी और पीएमटी) > मेडिकल > दस्तावेजीकरण	पैरा-19
प्रवेश परीक्षा की तिथि	कार्यक्रम की संभावित तिथि 01 से 15 जून 2027 है (अंतिम तिथियों की सूचना अलग से दी जाएगी।)	
सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईई)	ऑनलाइन सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईई) 13 भाषाओं (यानी अंग्रेजी, हिंदी, मलयालम, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, उडिया, बंगाली, उर्दू, गुजराती, मराठी और असमिया) में आयोजित की जाएगी।	पैरा-21.6
प्रशिक्षण अवधि	24 सप्ताह	
अवकाश	अग्निवीरों के लिए प्रति वर्ष 30 दिन की छूट्टी लागू होगी। इसके अतिरिक्त, सक्षम चिकित्सा प्राधिकारी की चिकित्सकीय सलाह के आधार पर बीमारी की छूट्टी भी लागू होगी।	पैरा-11
वेतन, भत्ते और संबद्ध लाभ	वर्ष / अनुकूलित पैकेज (मासिक) / हाथ में 70% / अग्निवीर कोष निधि में योगदान (30%) / भारत सरकार द्वारा कोष निधि में योगदान सभी आंकड़े रुपये में हैं (मासिक अंशदान) (लगभग) पहला वर्ष: 30,000/- / 21,000/- / 9,000/- / 9,000/- दूसरा वर्ष: 33,000/- / 23,000/- / 9,900/- / 9,900/- तीसरा वर्ष: 36,500/- / 25,550/- / 10,950/- / 10,950/- चौथा वर्ष: 40,000/- / 28,000/- / 12,000/- / 12,000/-	पैरा-13 & 14
सेवानिधि	चार वर्ष बाद अग्निवीर कोष निधि में कुल योगदान: रु. 5.02 लाख / रु. 5.02 लाख चार वर्ष बाद निकासी: सेवानिधि पैकज के रुप में लगभग 10.04 लाख रुपये (ब्याज को छोड़कर पूर्ण राशि)	पैरा-14
जीवन बीमा कवर	अग्निवीर को उनकी नियुक्ति अवधि के दौरान 48 लाख रुपये का गैर अंशदायी जीवन बीमा कवर प्रदान किया जाएगा।	पैरा-15
मृत्यु मुआवजा	48 लाख रुपये के बीमा कवर के अतिरिक्त, सेवा के दौरान हुई मृत्यु पर मृतक के निकटतम संबंधी (एनओके) को 44 लाख रुपये की एकमुश्त अनुग्रह राशि प्रदान की जाएगी।	पैरा-15
चिकित्सा एवं सीएसडी सुविधा	भारतीय सेना में अपनी सेवा अवधि के दौरान अग्निवीर सेवा अस्पतालों में चिकित्सा सुविधाओं के साथ-साथ सीएसडी प्रावधानों के भी हकदार होंगे।	पैरा-12
अग्निवीरों की नियुक्ति अवधि	भारतीय सेना चार साल की अवधि के बाद अग्निवीरों को अपने पास रखने के लिए बाध्य नहीं है।	पैरा-8
सैनिक के रुप में नामांकन (नियमित कैडर)	चार वर्ष की सेवा पूरी होने पर, संगठन की आवश्यकताओं और निर्धारित नीतियों के आधार पर, अग्निवीरों के प्रत्येक विशिष्ठ बैच के 25% तक को भारतीय सेना में नियमित कैडर के रुप में भर्ती किया जाएगा।	पैरा-8

अस्वीकरण

विज्ञापन में दी गई शर्तें और निमय केवल दिशानिर्देश है और समय-समय पर संशोधित सरकारी आदेश चयनित उम्मीदवारों पर लागू होंगे।

भारतीय सेना बिना कोई कारण बताए किसी भी स्तर पर संपूर्ण चयन प्रक्रिया के किसी भाग को रद्द करने/संशोधित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।

परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की अनुचित गतिविधि में लिप्त पाए जाने वाले उम्मीदवारों को स्थायी रुप से परीक्षा से वंचित कर दिया जाएगा।

पंजीकरण के दौरान दर्ज की गई जानकारी अंतिम होगी और बाद में इसमें कोई बदलाव नहीं किया जाएगा। गलत जानकारी दर्ज करने पर उम्मीदवारी रद्द कर दी जाएगी।

CBC 10601/11/0082/2526